



# अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत उवाच

सामाज्यमाहु तस्स जं,  
जो अप्पाण भए ण दंसए।

जो भय से विचलित नहीं  
होता, उस साधक के  
सामायिक होता है।

• नई दिल्ली • वर्ष 24 • अंक 16 • 23 - 29 जनवरी 2023



प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 21-01-2023 • पेज : 12 • ₹ 10

## सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन और सम्यक् चरित्र हो वर्धमान : आचार्यश्री महाश्रमण

बालोतरा, 90 जनवरी, 2023

बालोतरा में त्रिदिवसीय वर्धमान महोत्सव के द्वितीय दिन। अध्यात्म साधना के धनी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि वर्धमानता अभिष्ट बहुत लोगों को हो सकती है, परंतु वर्धमान होने के लिए अभिष्ट होना मात्र पर्याप्त नहीं है। अभिष्ट होने के साथ वैसा पुरुषार्थ करना वांछनीय होता है। वर्धमानता की दिशा भी निर्धारित होनी चाहिए।

ज्ञान में वर्धमान होना एक बात है। ज्ञान अपने आपमें क्षयोपशम भाव से संदर्भित है। ज्ञान में और विवेचन किया जाए कि मैं किस प्रकार के ज्ञान प्राप्त करने का विशेष प्रयास करूँ। साधु-साध्वियाँ, समणियाँ विविध विषय अध्ययित हो सकते हैं। साधु का मुख्य विषय है—धार्मिक अध्ययन करना। आगमिक व प्रवचनोपयोगी सामग्री जहाँ से मिले उसका अध्ययन करना।

वर्धमानता के लिए दर्शन भी पुष्ट रहे। दर्शन शब्द के अनेक अर्थ हो सकते हैं। एक अर्थ है दर्शन का देखना। दूसरा अर्थ है—दिखाना। तीसरा अर्थ है—नेत्र जिसके द्वारा देखा जाए। चौथा अर्थ है सिद्धांत, फिलॉसोफी, दर्शन का अध्ययन करना। पाँचवाँ अर्थ है—सामान्य अवबोध, छठा अर्थ है—आकर्षण, रुचि, श्रद्धा।

ज्ञान और चरित्र के बीच में दर्शन, श्रद्धा निष्ठा रहती है तो ज्ञान आचार में चरित्र में परिणित हो जाए। हमारे जीवन



में श्रद्धा और निष्ठा का बड़ा महत्त्व है। हम सम्यक् दर्शन को वर्धमान रखें, आगे बढ़ाएँ। सम्यक्त्व को क्षायिक सम्यक्त्व की स्थिति में ले जाया जा सके, तो दर्शन का पूर्ण विकास हो जाता है। हम भावना करें कि मेरा क्षायिक सम्यक्त्व शीघ्र क्षायिक तक पहुँच जाए।

सम्यक्त्व को पुष्ट बनाना है, तो कषायमंदता रहे। यह आस्था रहे कि वही सत्य है जो जिनेश्वरों ने प्रवेदित किया है। वीतराग भगवान कभी गलत-झूठ नहीं बोलते। जो सत्य है, उसको मेरा समर्थन है, मैं उसके प्रति प्रणत रहूँ। कोई भी ग्रंथ, पंथ या संत हो, मेरा मतलब सच्चाई से है। मैं सच्चाई-अच्छाई का सम्मान करूँ।

सम्यक् दर्शन को पुष्ट करने के लिए तीसरी बात है—तत्त्व बोध का प्रयास हो। तत्त्वज्ञान हो जाए। अध्ययन में अनाग्रह

का भाव हो। यथार्थ को समझने का प्रयास करें। देव, गुरु, धर्म के प्रति श्रद्धा-निष्ठा का भाव रहे। चरित्र में भी वर्धमानता रहे। चरित्र को निर्मल बनाने के लिए प्रतिक्रमण अच्छा करें और फिर प्रायश्चित्त ग्रहण अच्छा हो। जो बोल रहे हैं, उसका अर्थ हमारे समझ में आ जाएँ। उच्चारण अच्छा हो। दत्त चित्तता रहे। आलोचना भी अच्छी हो जाए।

जीवन के अंत में पहले आलोचना अच्छी रहे। दिल्ली में साध्वी कनकप्रभाजी को भी साधुपणे की आलोचना विस्तार से कराई थी। हमारी शुद्धि हो जाए। स्वयं ध्यान रखें; कई कारण से दोष लग सकते हैं, पर प्रायः सभी आलोचना लेते रहते हैं। प्रायश्चित्त लेने के बाद भी भूल न हो जाए। मन में प्रायश्चित्त की भावना होना अच्छी बात है।

ईर्या समिति में हमारी जागरूकता रहे। साधन का काम कम पड़े, साधना अच्छी चले। ईर्या समिति भी एक साधना है। हमारी समितियों, गुप्तियों में हमारी जागरूकता रहे तो चरित्र की विशुद्धि रहती है। इन सबके प्रति जागरूकता रखना अभिवांछित है।

मुख्य मुनि महावीर कुमार जी ने कहा कि मुमुक्षुओं की संख्या के साथ क्वालिटी भी अच्छी रहे। विद्या, विनय और विवेक—ये तीन गुण प्रत्येक व्यक्ति में रहें। जो व्यक्ति समुद्र की तरह गंभीर होता है,

वह विद्या ग्रहण कर सकता है। ज्ञानरूपी प्रकाश की ओर बढ़ें। विद्या भी आत्म-कल्याण करने वाली हो। जिसमें भक्ति-निष्ठा है, वह जीवन के किसी भी पड़ाव में विद्या ग्रहण कर सकता है। ज्ञान व धर्म का मूल विनय है। विवेक ही धर्म है। हम विद्या, विनय और विवेक से वर्धमान बन सकते हैं।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा कि वीर पुरुष महान पथ के पथिक होते हैं। आचार्य भिक्षु महान पथ के पथिक थे। तेरापंथ प्रभु महावीर का पंथ है। सैकड़ों-हजारों लोग उनके अनुगामी बन गए। शताब्दियों बाद भी संघ गतिशील है।

### आध्यात्मिक उन्नयन करते रहें राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के कार्यकर्ता : आचार्यश्री महाश्रमण

बालोतरा के तेरापंथ भवन में चार दिवसीय प्रवास कर रहे जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अनुशास्ता, महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी की मंगल सन्निधि में मंगलवार को सायं साढ़े सात बजे राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सैकड़ों कार्यकर्ताओं की एक प्रेरणास्पद संगोष्ठी भवन के अमृत सभागार में आयोजित हुई।

आचार्यश्री ने समुपस्थित कार्यकर्ताओं को पावन पाथेय प्रदान करते हुए अपनी चेतना को निर्मल बनाए रखने के चार सूत्र—मैत्री, प्रमोद, कारुण्य और माध्यस्थ भाव के विकास करने की प्रेरणा प्रदान की। आचार्यश्री ने आशीष प्रदान करते हुए कहा कि राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के कार्यकर्ता अपनी चेतना को निर्मल बनाते हुए अपना धार्मिक-आध्यात्मिक उन्नयन करते रहें।

कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ राजस्थान के प्रांत प्रचारक योगेन्द्र कुमार ने भी अपनी अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन जिला प्रचारक रोहितास ने किया। इस कार्यक्रम में श्रीमठ-कानाना के महंत श्री परशुराम गिरिजी, जिला संघचालक घेवरराम भील व नगर संघचालक सुभाष चौपड़ा भी उपस्थित थे।







# अध्यात्म की साधना में आत्मा पर ध्यान देना अपेक्षित : आचार्यश्री महाश्रमण



पचपदरा सिटी, 12 जनवरी, 2023

जिनशासन प्रभावक आचार्यश्री महाश्रमण जी बालोतरा में वर्धमान महोत्सव का आयोजन संपन्न कर पचपदरा सिटी पधारे। मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए महातपस्वी ने फरमाया कि अध्यात्म के क्षेत्र में आत्मा का बहुत महत्त्व है। आत्मवाद एक ऐसा सिद्धांत है, जिस

पर जैन शास्त्रों में भी सामग्री मिलती है। एक बड़ा विषय है—आत्मवाद।

जैन दर्शन में ये कई विषय महत्त्वपूर्ण हैं, जैसे आत्मवाद, कर्मवाद, लोकवाद, पुनर्जन्मवाद, क्रियावाद आदि। आत्मा अपने आपमें अमूर्त है। चैतन्यमय है। अध्यात्म शब्द में भी आत्मा आ गया। आत्मा और शरीर ये दो अलग-अलग

तत्त्व हैं। नास्तिक विचारधारा में जीव और शरीर एक ही हैं।

भेद विज्ञान की धारा में जीव अन्य और शरीर अन्य है। ये अध्यात्म का महत्त्वपूर्ण आधार है। आत्मा-शरीर अलग-अलग है, तो पुनर्जन्म की बात हो सकती है। जन्म-मरण की मुक्ति भी संभव है, उसका उपाय है—धर्म साधना। आत्मा स्थायी है तो शरीर अस्थायी, आत्मा अमूर्त है, तो शरीर मूर्त। आत्मा चैतन्य है, तो शरीर अचेतन। दोनों में बड़ी भिन्नता है।

अध्यात्म में आत्मा पर ध्यान करना अपेक्षित होता है। शरीर तो नश्वर है। स्थूल शरीर हमेशा छूटने वाला है। लोभ से घनीभूत व्यक्ति के पास कितना ही धन आ जाए संतोष नहीं होता। इस वैभव को छोड़ करके आत्मा एक दिन आगे चली जाती है। फिर इतने धन के लिए पाप क्यों करूँ। यह चिंतन आत्मा को अध्यात्म की ओर मोड़ने वाला हो सकता है।

धन साथ में नहीं जाता, धर्म साथ में

जाने वाला है। कर्म के साथ धर्म जुड़ जाए। मैं अकेला हूँ। मैं अनेक हूँ; सापेक्ष बात हो सकती है पर निश्चय नय से आत्मा अकेली है। कोई साथ नहीं है।

मैं ही कर्मों का कर्ता और भोक्ता हूँ। अंतिम सीमा में कोई मेरा नहीं। एक आत्मा की ओर मुँह रहे। जीयो बाहर, रहो भीतर। अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान भीतर में रहने का अभ्यास कराते हैं। एकात्म की ओर मुख हो जाता है, तो आत्मा परम की ओर आगे बढ़ सकती है।

आज पचपदरा आना हुआ है। पचपदरा से हमारे धर्मसंघ में सीर है। यहाँ पर सभी में धर्म की भावना पुष्ट रहे। विद्यार्थियों को तीन संकल्प स्वीकार करवाए।

पूज्यप्रवर के स्वागत में मुनि ध्रुवकुमार जी, पचपदरा की साध्वियाँ-समणियाँ ने समूह गीत का संगान किया। समणी नियोजिका अमलप्रज्ञा जी, साध्वी जगतयशा जी,

साध्वी प्रमोदश्री जी, कन्या मंडल संयोजिका रूपेन्द्र डेलड़िया, तेममं अध्यक्ष विजया देवी, महेंद्र कुमार चोपड़ा, तेरापंथी सभा से इंद्रमल चोपड़ा, सभा, समणी सुमनप्रज्ञा जी, समणी प्रणवप्रज्ञा जी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। ज्ञानशाला एवं तेयुप ने समूह गीत की प्रस्तुति दी।

साध्वीप्रमुखश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि हर व्यक्ति अमृत का पान कर अमर बनना चाहता है। साधु-गुरु के दर्शन अमृत होते हैं। गुरुदेव अमृत का ही वितरण कर रहे हैं। जिस व्यक्ति को अमृत की उपलब्धि हो जाती है, वो आनंद में सराबोर हो सकता है। अमृत वही वितरण कर सकता है, जो लोक-कल्याण का कार्य करता है।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि धर्म की दृष्टि से विकास विशेष होना चाहिए।

## समता की साधना के बगैर अहिंसा धर्म साधना असंभव : आचार्यश्री महाश्रमण

दानपुरा, 96 जनवरी, 2023

तेरापंथ सरताज आचार्यश्री महाश्रमण जी अपनी धवल सेना के साथ आज लगभग 90 किलोमीटर का विहार कर राजकीय माध्यमिक विद्यालय दानपुरा पधारे। परमपूज्य ने पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि ज्ञानी आदमी के ज्ञान का सार यह है कि वह किसी की हिंसा नहीं करता। अहिंसा समता है, धर्म है। समता धर्म के बिना अहिंसा धर्म सधना मुश्किल या असंभव है।

अहिंसा को परम धर्म कहा गया है। संसार में अनंत प्राणी हैं, आदमी प्राणियों की हिंसा से जितना संभव हो सके बचने का प्रयास करे। प्राणियों को अपने समान समझे। मैं जीना चाहता हूँ, सुख चाहता हूँ, दुःख नहीं चाहता हूँ तो दूसरे प्राणी भी यही चाहते हैं। मैं आत्मा के कल्याण के लिए दूसरों को दुःख नहीं दूँ।

धर्म का सर्वस्व है कि जो अपने लिए प्रतिकूल है, वो दूसरों के लिए मत करो। जो व्यवहार मैं दूसरों से नहीं चाहता तो तुम भी दूसरों के साथ वह व्यवहार मत करो।

दुनिया में हिंसा भी चलती है, युद्ध भी होता है, परंतु शांति के लिए अहिंसा अपेक्षित है। हिंसा के अनेक कारण हैं—लोभ, गुस्सा आदि। आदमी हिंसा में न जाए। मांसाहार न करें। आदमी छलनापूर्वक कोई कार्य न करे। यह एक प्रसंग से समझाया कि कथनी-करणी में अंतर न हो। आस्वाद के लिए हिंसा में न जाएँ।

धन के लिए भी आदमी हिंसा कर सकता है। लक्ष्य रहे कि अनावश्यक हिंसा न हो। किसी भी प्राणी की शांति में बाधा नहीं डालनी चाहिए। हमारे मन में सब प्राणियों के प्रति अहिंसा का भाव रहे। हिंसा करने से पाप कर्म का बंध होता है। मन, वचन व शरीर से भी अहिंसा का भाव हो।

गृहस्थ भी जितना हो सके हिंसा से बचने का प्रयास करें। बिना किसी जीव को सताए हमारी सुरक्षा हो सकती है। अहिंसा धर्म है, इसको हम जीवन में पालने का, आत्मसात करने का प्रयास करें।

## कर्म निर्जरा के लिए की गई तपस्या ही सार्थक

सिरियारी।

आचार्य भिक्षु समाधि स्थल संस्थान के हेम अतिथिगृह में मुनि हितेंद्र कुमार जी के एकासन तप सप्त वर्षीय संपन्नता पर आयोजित कार्यक्रम में शासनश्री मुनि मणिलाल जी ने कहा कि तपस्या का उद्देश्य आत्मशुद्धि का होना चाहिए। इहलोक, परलोक या ख्याति प्रसिद्ध और यश नाम के लिए नहीं हो। कर्म निर्जरा के लिए की गई तपस्या सार्थक होती है। केवल भूखा रहना ही तपस्या नहीं है। खाद्य संयम की भावना जब प्रबल होती है तभी तपस्या होती है।

मुनिश्री ने आगे कहा कि मुनि हितेंद्र कुमार जी की तपस्या सर्वोत्कृष्ट है, क्योंकि इनकी तपस्या में सहजता व समत्व का भाव है। यद्यपि तपस्या करना सरल काम नहीं है, मनोबल व संकल्प सुदृढ़ होता है तभी तपस्या हो पाती है। अनुत्तर संयम साधना से ही इतने लंबे समय तक तपस्या हो पाती है अन्यथा व्यक्ति के लिए भूख को सहन करना संभव नहीं है।

मुनि चैतन्य कुमार 'अमन' ने कहा कि इंद्रिय संयम व आसक्ति का भाव छूटने पर ही तपस्या हो पाती है। मुनि हितेंद्र कुमार जी ने सचमुच अनासक्ति का परिचय दिया है तब ही यह प्रलंब तपस्या हो पाई है।

सिरियारी में व्यवस्था का दायित्व संभालने वाले मुनि आकाश कुमार जी ने कहा कि सात वर्ष यानी लगभग 3285 दिनों तक एकाशन तप करना बहुत कठिन कार्य है। एकाशन अर्थात् एक दिन में मात्र एक बार भोजन करना आसान कार्य नहीं है, मुनि हितेंद्र कुमार जी ने अपनी दुबली-पतली काया में भी प्रबल मनोबल के साथ तपस्या की है और आगे भी ये अपनी तपस्या को जारी रखेंगे। मेरा इनकी तपस्या के प्रति बहुत-बहुत साधुवाद एवं अनुमोदना का भाव है।

मुनि हितेंद्र कुमार जी ने आचार्य महाप्रज्ञ व वर्तमान अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए कहा कि जब गुरुओं की महान कृपा होती है तभी ये तपस्या संभव होती है। आज आचार्य भिक्षु की समाधि स्थल पर सात वर्ष तपस्या की संपन्नता पर मैं प्रसन्न हूँ। साथ ही मुनि मणिलाल जी के आशीर्वाद व व्यवस्थापक मुनि आकाश कुमार जी से मुझे पूरा सहयोग मिल रहा है। जिससे मैं तपस्या में आगे बढ़ पा रहा हूँ। सहयोग के अभाव में तपस्या करना आसान नहीं है।

इस अवसर पर बहन साध्वी नम्रताश्री जी का संदेश प्राप्त हुआ उसका वाचन किया। कार्यक्रम में नयना मेहता, लीला मेहता, सुरेखा मेहता, शशि जैन ने तपस्या की अनुमोदना करते हुए विचार प्रकट किए। संचालन शिवांगी मेहता ने किया। तप अनुमोदना में सिरियारी संस्थान के स्टाफ वर्ग के साथ अहमदाबाद, सूरत, मुंबई, तमिलनाडू से कांजीवरम्, तेनापेट तथा लूणकरणसर, गंगाशहर आदि स्थानों से काफी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं ने अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई। प्रथम बार सिरियारी संस्थान में तप अनुमोदना कार्यक्रम से अब अपनी प्रसन्नता जाहिर कर रहे थे।

## फौलादी आत्मविश्वास की नजीर समणी स्थितप्रज्ञा

□ साध्वी सरलयशा □

फौलादी संकल्प की स्वामी समणी स्थितप्रज्ञा समण श्रेणी के इतिहास में मील का पत्थर बन दृश्य जगत से अलविदा हो गई। उनका जीवन विशेषताओं का समवाय था। ऋःसत्व मनोबल, सहिष्णुता, लक्ष्यवेधि जुनून, अप्रमत्तता, पुरुषार्थ परायणता, सजगता, स्नेहिल व्यवहार के साथ कोहिनूर की भाँति चमकता उनका गुण था—फौलादी आत्मविश्वास। हिलेरी जब अपने आत्मविश्वास और धैर्य के बलबूते पर एवरेस्ट पर चढ़ सकता है तो फौलादी इरादों वाली सरिता जिंदगी में आने वाली बाधाओं की पटरियों को क्यों नहीं लॉघ सकती।

दृढ़ आत्मविश्वास की बदौलत उन्होंने जीवन में हर वांछित मंजिल को हासिल किया। फिर चाहे वैराग्यवस्था में दीक्षा की अनुमति पाने की जद्दोजहद हो या जीवन विकास का पायदान। अथवा जीवन की अंतिम श्वास संधारे में संयम पर्याय अवस्था में परिसंपन्न करने की भावना हो। यों कहा जा सकता है आत्मविश्वास के सहारे उनका हर असंभव संभव में तब्दील होता नजर आया। उनका हर सपना कृतार्थ बना।

मुझे उनके साथ समण श्रेणी में सह दीक्षित होने का सौभाग्य मिला। मैंने उनकी जीवनगत क्रिया-कलापों को नजदीकी से देखा। वो बड़े धुनी थे। जो ठान लेते उसे पूरा करके ही दम लेते। फिर चाहे रात हो

या प्रभात। उन्होंने अपने भीतर छिपी आत्मशक्तियों को पहचाना। पा०शि० संस्था में उनकी पहचान ध्यान साधिका के रूप में होने लगी। तुलसी अध्यात्म नीडम् की योगिक गतिविधियों का समणीवस्था में मार्गदर्शन किया।

प्रेक्षाध्यान पत्रिका का वर्षों तक सह-संपादन भी किया। मुझे अच्छी तरह याद है प्रेक्षाध्यान पत्रिका का सह-संपादन चार्ज उन्होंने गुरुदृष्टि से मुझे सौंपा। ढेर सारे कागजाद सौंपते हुए उन्होंने कहा—“आपको जो काम में आए, काम में लेना अन्यथा हटा देना।” उनकी इस हिदायत ने मुझे बहुत प्रभावित किया। उन्होंने कोई अपना इरादा मुझ पर थोपा नहीं, स्वतंत्र चिंतन का आयाम दिया। वो ऊपर से जितने सख्त नजर आते, भीतर से उतने ही कोमल थे।

अपने प्रभाव से उन्होंने समणी वर्ग की अंतरंग परिषद में ‘बापजी’ नाम से अपनी पहचान बनाई। वे मात्र बड़े ही नहीं थे उनमें बड़प्पन के अनेक गुण विकसित थे। मैंने अनुभव किया के हर एक नियोजिका को न केवल सम्मान ही देते अपितु विनम्र व्यवहार का समाचरण भी करती थी।

२०२२ में शासनमाता अलंकरण के समय अस्वस्थ चल रहे थे। मैं उनसे

मुलाकात करने गौतम ज्ञानशाला गई। उन्होंने सहदीक्षित के मिलन की खुशी जाहिर की। कुछ दिली बातें भी की। सभी बातों का निचोड़ था वो जिस अवस्था में थे बड़े पॉजेटिव थे। मुझे भी सदैव पॉजेटिव रहने की प्रेरणा मिली।

फिर से, आत्मविश्वास जीवन की बेहतरीन ताकत है। यह उनका प्रयोग पक्ष भी बना। ‘मोयपडिमा’ का अनुष्ठान करने वाली वह एकमात्र समणी थी। उनके आत्मबल का सबूत है ज्येष्ठ महीने में अनुष्ठान का संचरण। उन्होंने अपने जीवन से कवि की पंक्तियों को प्राणवान् किया—

**फौलादी है सीने अपने,  
फौलादी हैं बाहें।  
हम चाहें तो पैदा कर दें,  
चट्टानों में राहें।।**

समण श्रेणी के नाम उन्होंने वसीयतनामा से बतौर आत्मविश्वास का प्राणवान टॉनिक अपने जीवन से छोड़ा है।

समण श्रेणी के प्रथम छः सदस्यों की पंक्ति में पहला नाम समणी स्थितप्रज्ञा और छेला नाम समणी विशुद्धप्रज्ञा है। दोनों ही चंदेरी के चमकते सितारे साबित हुए। स्वनाम धन्य दोनों ही विदेह हो गए। समण श्रेणी से इतिहास में वो सदा ध्रुवतारे की नाई चमकते रहेंगे। दिवंगत आत्मा के शाश्वत मंजिल पर आरोहण की मंगलकामना।

### अहम

● डॉ० समणी मंजुलप्रज्ञा ●

व्यक्ति का आना और जाना संसार का सामान्य और शाश्वत नियम है। कोई भी इसका अपवाद नहीं है। आने और जाने के बीच व्यक्ति द्वारा प्रस्तुत रेखाचित्र उसे साधारण या असाधारण की भूमिका में प्रतिष्ठित कर देते हैं।

जैन धर्म, तेरापंथ धर्मसंघ में नवम् आचार्यश्री तुलसी के युग में एक नई शुरुआत ‘विलक्षण दीक्षा’ के नाम से हुई। इसमें संभागी छह मुमुक्षु बहनों में प्रथम नाम जिनका रहा, उसे समणी स्थितप्रज्ञा के नाम से जाना गया।

समणी स्थितप्रज्ञा को जितना मैंने करीबी से जाना, देखा, समझा कुछ प्रसंग स्मृति पटल पर उतर रहे हैं। एम०ए० के बाद शिक्षा के संदर्भ में मेरी कोई तत्परता न देख, उन्होंने मुझे कहा पी-एच०डी० क्यों नहीं कर लेते? मैंने अपने डॉक्यूमेंट्स की अपर्याप्तता आदि की बात कही। उन्होंने प्रेरणा व प्रोत्साहन की चाबी भरते हुए कहा—ये कोई खास बात नहीं है। इसकी तो पूर्ति की जा सकती है। वे स्वयं मुझे शोध विभागाध्यक्ष के पास लेकर गए। सारी जानकारी व तैयारी कराके मुझे शोध कार्य के लिए तैयारी कर दिया। मेरे प्रमाद को दूर

कर मुझे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। शिक्षा के साथ परमार्थ की यात्रा के लिए समुचित किया।

समणी स्थितप्रज्ञा को मैं निरंतर सजगप्रज्ञा के रूप में पाती हूँ। स्वाध्याय के माध्यम से वे श्रुत-सेवी रहे, जप व ध्यान के प्रयोग से आत्मसेवी रहे, उपदेश-प्रेरणा में समय के नियोजन से वे तिन्नाण के साथ

तारथान की यात्रा में रत रहे, स्वावलंबी चेतना के साथ-साथ सहयोग व सेवाभावना से सामूहिक जीवन को आनंद व सार्थकता प्रदान की।

सुप्त-प्रसुप्त चेतना को झकझोरने में, कर्म-रोग को दूर करने में उनकी लगन, मेहनत एवं जागृति देख मस्तक नत हो जाता है और दिल लाख-लाख धन्यवाद देता है।

## संस्कार निर्माण कार्यशाला का आयोजन

कोलाघाट।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में संस्कार निर्माण कार्यशाला का आयोजन स्थानीय जैन भवन में किया गया। इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि आज के भौतिक व आधुनिक युग में व्यक्ति का चिंतन तेजी के साथ बदल रहा है। ऐसी स्थिति में संस्कारों व संस्कृति के संरक्षण के लिए धार्मिक शिविरों व कार्यशालाओं की परम आवश्यकता रहती है। इसके माध्यम से बच्चों में संस्कारों का जागरण हो सके।

संस्कारों के अभाव में सत्य, शील की साधना भी संभव नहीं है। संस्कारों के जागरण से ही व्यक्ति के व्यक्तित्व में निखार आता है। अनुशासन, विनय, सहनशीलता, गुरु आज्ञा, स्वावलंबन आदि तत्त्वों से व्यक्ति संस्कार संपन्न हो सकता है।

मुनिश्री ने जीवन विज्ञान के प्रयोग भी करवाए। मुनि परमानंद जी ने बच्चों को प्रशिक्षण देते हुए अच्छे संस्कारवान बनने की प्रेरणा दी। बाल मुनि कुणाल कुमार जी ने मधुर गीत का संगान किया। बच्चों ने मनमोहक प्रस्तुति दी। तिताश कुमार बंधोपाध्याय प्रिंसिपल ने कहा कि पहली पाठशाला घर है। कार्यक्रम का संचालन उपासिका चंद्रकला बोथरा ने किया। कार्यक्रम में २६ बच्चों ने भाग लिया।

## समण श्रेणी की मुस्कराहट-समणी स्थितप्रज्ञा

□ समणी स्वर्णप्रज्ञा, डॉ. समणी मंगलप्रज्ञा □

गुरुदेव तुलसी ने जिस दिन विलक्षण दीक्षा देने की घोषणा की थी, वह तेरापंथ का दुर्लभ पृष्ठ था। उस समय हजारों श्रोता के मन में समुद्र की लहरों की भाँति हजारों जिज्ञासाएँ थीं कि आज तक जितनी दीक्षाएँ हुई हैं, उससे परे क्या विलक्षण होगा? कौन इस अनजानी राहों पर चलेगा? क्या उनके माता-पिता अपनी संतानों को यूँ ही छोड़ देंगे? उस समय किसी ने यह कल्पना नहीं की थी कि विलक्षण दीक्षा के रूप में समण श्रेणी संघ की यशोकीर्ति की एक धवल पंक्ति होगी।

गुरु का आह्वान पाकर मुमुक्षु सरिता के अंतस में गुरुभक्ति की उर्मिल तरंगित होने लगी। वह न स्वयं अपने को अपितु पिता के विरोधी स्वयं को भी सहर्ष आज्ञा देने के अनुकूल बनाया।

गुरुदेव तुलसी ने इस श्रेणी की नींव की स्थिरता को सूचक रूप उनको समणी स्थितप्रज्ञा का अभिधान दिया। वह प्रथम दीक्षित और वह ज्येष्ठा थी। संस्था से समणी पर्याय तक उनका व्यक्तित्व उदीयमान और मेधावी के रूप में अपनी निजत्व की पहचान रखता था। विकास की दौड़ में उनका विश्वास सातत्य की गति में था। सन्निष्ठ पुरुषार्थ और सातत्य ने उनकी प्रतिभा को अहं भूमिका प्रदान की।

उनके बाहर-भीतर, दाएँ-बाएँ, ऊपर-नीचे सर्वत्र ध्यान, स्वाध्याय और मंत्र साधना का दरिया मचलता था। यही कारण था कि अस्वस्थता के क्षणों में संकल्पी मन घड़ी की सुइयों को भी नजरअंदाज करके ‘नित्य नेम’ की परिपालना नहीं कर लेता, तब तक उनको सकुन नहीं मिलता।

उनका स्वाध्याय शील मन जब आगम व अन्य काव्य ग्रंथों का स्वाध्याय करता तब गौतम ज्ञानशाला का ऐसा रोमांचक वातावरण बनता था कि शैक्ष समणियों को एक नया बोध पाठ मिलता।

सामाजिक चेतना में उन व्यक्तियों को छवि सार्थक महेनीयता और कमनीयता लिए हुए उभरती है जो स्व का आलंबन लेकर दूसरों की वैशाखी पर नहीं चलते। “ऐ मौत! तू मेरे पास क्या आएगी मैं स्वयं चलकर आऊँगा।” (Bold Word) इस कहावत को अंतिम दिनों तक चरितार्थ किया। मूलतः वह अपना कार्य स्वयं करना चाहती थी, फिर भी किसी ने सहयोग किया तो उनके प्रति कृतज्ञता के स्वर अहर्निश मुखरित होते थे। वह स्वावलंबी समर्पित साधकों की उज्ज्वल परंपरा की एक सुदृढ़ कड़ी थी।

जीवन एक ग्रंथ है। उसमें अनेक पृष्ठ अनुकूलता-प्रतिकूलता की स्याही से अंकित होते हैं। वही व्यक्ति ऊर्जस्वल होता है जो प्रतिकूलता में भी विचारधारा को सौम्य रखता है। समणी स्थितप्रज्ञा ने भी हर परिस्थिति में भी ‘स्थितप्रज्ञ’ बनने का अभ्यास किया।

विवेकानंद ने कहा—यदि तुम्हारे अंदर करुणा नहीं है तो तुम्हारा दिल पत्थर का टुकड़ा है, इसके विपरीत तुम करुणा के बागवाँ हो। (Bold word) उन्होंने अपनी करुणा की लौ को इतना प्रज्वलित रखा कि दूसरों की पीड़ा सुनकर उनके हाथ दुःख-दर्द को दूर करने में तत्पर हो जाते।

वे साधिका के साथ-साथ सामाजिक भी थे। वे घंटों-घंटों दूसरों के पास बैठकर प्रतिबोध देते थे। ऐसा कोई व्यक्ति नहीं होगा, जो उनके संपर्क में आया हो और उनके अपनत्व के घेरे में कैद न हो गया हो। (N.P.) गण और गणपति की दृष्टि उनकी पूजा और अर्चा थी। संघ के प्रत्येक सदस्य के भीतर मानो उन्हें संघ-देवता के ही दर्शन होते थे। अपने जीवन काल में इस श्रेणी की प्रत्येक नियोजिकाओं की प्रदत्त व्यवस्थाओं में सहयोगी भूत होती।

निष्कर्ष रूप में समणी स्थितप्रज्ञा साधना, स्वाध्याय, सजगता, समर्पण, सरलता, स्वाभाविकता और सौम्यता की पर्याय थी।

## सामायिक फेस्टिवल कार्यक्रम का आयोजन

अमराईवाड़ी।

अभातेयुप के तत्वावधान में तेयुप द्वारा सामायिक फेस्टिवल का आयोजन तेरापंथ भवन, अमराईवाड़ी में किया गया। उपासिका मंजुलता गेलड़ा ने सभी को अभिनव सामायिक का महत्त्व बताते हुए लगभग ३५ सदस्यों को सामायिक करवाई।

### भूल-सुधार

अंक १५ (१६ - २२ जनवरी, २०२३) में अंतिम पृष्ठ पर साध्वी स्थितप्रभाजी का देवलोकगमन में दिनांक ३१ दिसंबर, २०२३ की जगह ३१ दिसंबर, २०२२ पढ़ें।





## श्री महिला मंडल के विविध आयोजन

### 'उम्मीद एक बेहतर कल की' कार्यशाला का आयोजन

#### टी-दासरहल्ली।

अभातेमम के निर्देशानुसार महिला मंडल, टी-दासरहल्ली द्वारा अनाथ आश्रम में 'उम्मीद एक बेहतर कल की' चतुर्थ एवं पंचम चरण कार्यशाला आयोजित हुई, जिसका विषय था—'बुजुर्गों की सेवा और मीठी वाणी' कार्यशाला का शुभारंभ नवकार महामंत्र से हुआ।

अध्यक्षा रेखा मेहर ने सबका स्वागत किया। कार्यशाला के बारे में जानकारी दी एवं बुजुर्गों की सेवा का महत्त्व बताया। उपाध्यक्षा दीपिका गांधी ने बुजुर्गों की सेवा के लाभ बताए।

कोषाध्यक्ष नम्रता पितलिया ने एक कहानी के माध्यम से बच्चों को मीठी वाणी से बुजुर्गों की सेवा के बारे में वक्तव्य दिया। मंत्री गीता बाबेल ने मीठी वाणी से सबका कैसे हृदय कोमल बना सकते हैं, के टिप्स बताए। आश्रम में महिला मंडल की सराहना की।

कार्यशाला का संचालन गीता बाबेल ने किया। आभार ज्ञापन दीपिका गांधी ने किया।

#### हैदराबाद।

अभातेमम के निर्देशानुसार तेममं द्वारा 'निर्माण-उम्मीद एक बेहतर कल की' कार्यशाला का चतुर्थ चरण—ईमानदारी पर पी०आर० विला, गवर्नमेंट हाईस्कूल में आयोजित की गई। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई।

गीतिका नाहटा ने बच्चों को महाप्राण ध्वनि का ६ बार प्रयोग करवाया। अध्यक्ष अनीत गिडिया ने बच्चों, अध्यापकों व मंडल की बहनों का स्वागत किया।

मनीषा सिंधी ने टेक्निक 3, 2, 1, How to recalling power अपनी याददाश्त को कैसे बढ़ाएँ, विभिन्न मुद्राओं के द्वारा बच्चों को प्रयोग करवाए। प्रेम पारख ने गुरु और शिष्य का रिश्ता कैसा होता है, बताया। हर्षलता दुधोड़िया ने बच्चों को ईमानदारी पर रोचक कहानी सुनाई। हर्षलता दुधोड़िया और मनीषा सिंधी ने एक छोटा-सा नाटक का दृश्य दिखाकर बच्चों को बताया कि हमें ईमानदार क्यों होना चाहिए।

मंत्री श्वेता सेठिया ने प्रशिक्षिकाओं, बच्चों व मंडल की बहनों का धन्यवाद ज्ञापन किया। संयोजिका हर्षलता दुधोड़िया, मनीषा सिंधी का अच्छा सहयोग रहा। बच्चों में बिस्किट फल आदि वितरित किए गए। कार्यशाला में पूर्व अध्यक्ष प्रेम पारख, कोषाध्यक्ष शांता बेद आदि की उपस्थिति रही।

#### राजराजेश्वरी नगर।

अभातेमम द्वारा निर्देशित योजना निर्माण के अंतर्गत उम्मीद एक बेहतर कल की के तहत 'परोपकार और सत्संगति' विषय तेममं आर०आर० नगर बैंगलुरु के द्वारा गवर्नमेंट स्कूल में कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल की बहनों द्वारा नमस्कार महामंत्र से किया गया।

आशा लोढ़ा, वीना राखेचा और सिंदु, मंत्री सीमा छाजेड़ ने महाप्राण ध्वनि तथा योगा आदि के प्रयोग करवाए एवं उनसे होने वाले लाभ के बारे में बताया। स्थानीय भाषा में एक कहानी के माध्यम से बच्चों को दूसरों की मदद करने से होने वाले महत्त्व को समझाया। दूसरों की मदद करने से हमारे अंदर सकारात्मक ऊर्जा का निर्माण होता है, जिससे हमें खुशी प्राप्त होती है। सत्संगति से ही मनुष्य में मानवीय गुण उत्पन्न होते हैं और उसका जीवन सार्थक बनता है। बच्चों को सुंदर ढंग से समझाया।

दोनों विषयों पर नाटिका के द्वारा बच्चों को समझाया एवं एक-दूसरे की मदद करने का संकल्प भी करवाया। बच्चों ने उत्साह के साथ भाग लिया। कार्यशाला में ४० बच्चों ने भाग लिया।

#### आर०आर० नगर, बैंगलोर।

अभातेमम द्वारा निर्देशित योजना निर्माण के अंतर्गत उम्मीद एक बेहतर कल की के तहत 'बुजुर्गों की सेवा' विषय पर तेममं द्वारा गवर्नमेंट स्कूल में कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल की बहनों द्वारा नमस्कार महामंत्र से किया गया। दीपाली गोलछा और चंदा बेद ने महाप्राण ध्वनि तथा साथ में योगा आदि का प्रयोग करवाया एवं उनसे होने वाले लाभ के बारे में विस्तार से बताया।

स्थानीय भाषा में एक कहानी के माध्यम से बच्चों के अपने निजी जिंदगी में अनुशासन के महत्त्व के बारे में बताया। बुजुर्गों की सेवा करना हमारा कर्तव्य है और हमारे जीवन में इसका क्या महत्त्व है, इस पर बच्चों को समझाया।

कार्यक्रम में बच्चों ने उत्साह के साथ भाग लिया। कार्यशाला में ४५ बच्चों ने भाग लिया।

### ट पावर ऑफ रिसोलूशन

#### चेंबूर (मुंबई)।

अभातेमम के निर्देशन में तेममं के तत्वावधान में क्षेत्र चेंबूर द्वारा जनवरी माह की नारीलोक एक्टिविटी के अंतर्गत ट पावर

ऑफ रिसोलूशन का आयोजन शासनश्री सोमलता जी के सान्निध्य में सभा भवन के प्रांगण में किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वी रक्षितयशा जी द्वारा नमस्कार महामंत्र से हुई। महिला मंडल की बहनों ने मंगलाचरण किया। सभी का स्वागत चेंबूर संयोजिका तारा आच्छा ने किया।

साध्वी रक्षितयशा जी ने सभी को नमस्कार महामंत्र की माला फेरने का संकल्प कराया व संकल्प के साथ हर चीज संभव है, यह बताया। साध्वी संचितयशा जी ने हमारे जीवन में संकल्पों की कितनी महत्त्वपूर्ण जगह है आने वाले वर्ष में हमें लक्ष्य के प्रति कितना जागरूक रहना है व नारीलोक की कार्यशाला पर प्रेरणा पाथेय प्रदान किया।

दूसरे चरण में कालू तत्त्व शतक व ८ कर्मों पर आधारित बोर्ड गेम को ममता कच्छारा व भावना पटवारी ने रोमांचक तरीके से बहनों को खिलाया।

प्रतियोगिता में प्रथम कुसुम हिरण व द्वितीय भावना बड़ाला रहे। लगभग १५ बहनों ने प्रतियोगिता में भाग लिया, ३५ बहनों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन तारा आशा ने किया। मुंबई कार्यकारिणी से अंजु कोठारी व सेवा विभाग से कांता बड़ाला की उपस्थिति रही।

### कन्या सुरक्षा स्तंभ का उद्घाटन

#### जसोल।

अभातेमम के तत्वावधान में तेममं द्वारा 'कन्या सुरक्षा स्तंभ' का उद्घाटन किया गया। उद्घाटन के अवसर पर तेममं द्वारा भव्य रैली निकाली गई। सभापति नगर परिषद बालोतरा चैयरमैन सुमित्रा जैन द्वारा स्तंभ पर मांगलिक स्वस्तिक बनाया और मोली बांधकर स्तंभ का उद्घाटन किया।

इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में शशिकला नाहर, सारिका बागरेचा, विनीता बैगाणी, विशेष अतिथि के रूप में ईश्वरसिंह चौहान, बालोतरा प्रधान भगवतसिंह, पूर्व चैयरमैन प्रभा सिंधवी, उप सरपंच राजेंद्र छाजेड़, जसोल थाना अधिकारी डिंपल कंवर, महासभा जोधपुर संभाग प्रभारी गौतमचंद सालेचा, तेयुप अध्यक्ष तरुण भंसाली, रेखा चोपड़ा, महिला मंडल अध्यक्षा सोहनीदेवी सालेचा, मंत्री ममता मेहता सहित जसोल महिला मंडल पदाधिकारी एवं अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

अध्यक्ष सोहनी देवी सालेचा ने सभी का स्वागत किया। उपाध्यक्ष नीतू सालेचा ने आभार ज्ञापन किया।

## श्री पैसठिया यंत्र एवं छंद सिद्धि के लिए महानुष्ठान

#### राजाजीनगर।

साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में रवि पुष्य नक्षत्र के उपलक्ष्य में रवि पुष्य योग अमृसिद्धि योग एवं सर्वार्थसिद्धि योग हेतु श्री पैसठिया यंत्र एवं छंद सिद्धि के लिए महानुष्ठान का आयोजन स्थानीय ओसवाल कम्युनिटी सेंटर में राजाजीनगर तेरापंथ सभा ट्रस्ट, महिला मंडल एवं तेयुप द्वारा समायोजित किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री जी द्वारा सामूहिक नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुआ। तेममं द्वारा मंगलाचरण किया गया। सभा अध्यक्ष रोशनलाल कोठारी ने सभी का स्वागत करते हुए विचार रखे। सभा मंत्री मदनलाल बोरणा, तेयुप अध्यक्ष अरविंद गन्ना एवं तेममं अध्यक्षा चेतना वेद मूथा ने विचार व्यक्त किए।

साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी ने कहा कि मंत्र शक्ति का खजाना है। चेतना को जागृत करने का साधन है। मंत्र का अर्थ है अक्षरों का विशिष्ट संयोजन। मंत्र का संयोजन मंत्रद्रष्टा व ऋषि ही कर सकते हैं। मंत्र साधना का मुख्य लक्ष्य होता है कर्मों की निर्जरा, स्व की सुरक्षा, उपद्रवों की शांति व शक्ति का जागरण। आज के दिन पैसठिया छंद की विशेष साधना की जाती है। इस छंद में विशेष रूप से २४ तीर्थकरों की स्तुति की जाती है।

साध्वीश्री जी ने कहा कि इसकी आराधना करने से मंगल ही मंगल होता है साथ ही रोग, शोक, दुःख, दरिद्र एवं विघ्न-बाधाओं की शांति भी होती है। इसका नियमित प्रतिदिन तीन बार जप करने की प्रेरणा प्रदान की।

साध्वी मयंकप्रभा जी ने कहा कि तीर्थकरों की जितनी स्तुति की जाती है उतनी ही साधना की पवित्रता बढ़ती है एवं कर्मों की विशेष निर्जरा होती है। साध्वी मेरुप्रभा जी ने सुमधुर गीतिका प्रस्तुत की। महानुष्ठान में लगभग २८० जोड़ों द्वारा तीर्थकर की आराधना करते हुए लयबद्ध पैसठिया यंत्र का उच्चारण किया गया।

महानुष्ठान हेतु प्रायोजक के रूप में लक्ष्मीलाल, रोशनलाल, गणपतलाल, किरण कुमारा कोठारी एवं मनोहरलाल, गौतमकुमार, संजीवकुमार गन्ना ने अपना सहयोग प्रदान किया। इस अवसर पर बैंगलोर समाज की विभिन्न तेरापंथ संघीय संस्थाओं के पदाधिकारीगण की विशेष उपस्थिति रही। संचालन सभा उपाध्यक्ष अशोक चौधरी ने किया एवं आभार सभा सहमंत्री चंद्रेश मांडोत ने व्यक्त किया।

## मुनिश्री का स्वागत समारोह

#### वृहद कोलकाता।

मुनि जिनेश कुमार जी अपने सहवर्ती मुनियों के साथ कोलकाता पधारे हैं। वृहद कोलकाता और दक्षिण बंगाल की प्रशिक्षिकाएँ मुनिश्री की अगवानी करने समाज सेवी श्रावक भंवरलाल की फैक्ट्री पहुँचे, जहाँ मुनिश्री का प्रवास था। दक्षिण हावड़ा, उत्तर हावड़ा एवं उपनगर की बहनों ने मंगलाचरण किया।

मुनिश्री का स्वागत करते हुए दक्षिण कोलकाता, पूर्वांचल एवं टॉलीगंज की बहनों ने स्वागत गीतिका प्रस्तुत की। उत्तर कोलकाता, मध्य-उत्तर कोलकाता, बेलड़ांगा, महासभा और सॉल्ट लेक की बहनों ने गुरु भक्ति पर नाटिका प्रस्तुत की। आंचलिक संयोजिका डॉ० प्रेमलता चोरड़िया ने मुनिश्री का स्वागत-आभार व्यक्त किया।

आंचलिक सह-संयोजक संजय पारख, आंचलिक समिति सदस्य मालचंद भंसाली, कोलकाता सभा के अध्यक्ष अजय भंसाली और समाज सेवी भंवरलाल ने वक्तव्य प्रस्तुत किया। लगभग ७३ बहनें कार्यक्रम में उपस्थित थीं।

## नववर्ष का मंगलपाठ कार्यक्रम

#### भिवानी।

शासनश्री साध्वी सरोज कुमारी जी के सान्निध्य में नववर्ष के उपलक्ष्य में मंगलपाठ का कार्यक्रम तेरापंथ भवन, भिवानी में आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत शासनश्री साध्वीश्री के नमस्कार महामंत्र द्वारा हुई। साध्वी सोमप्रभा जी ने नववर्ष की मंगलकामना के उपलक्ष्य में स्वरचित गीतिका की सामूहिक प्रस्तुति साध्वीवृंद द्वारा की गई।

साध्वी प्रभावनाश्री जी ने मुक्तक के द्वारा नववर्ष की मंगलभावना व्यक्त की। साध्वी चिरागप्रभा जी ने जीवन के १० वर्षों में क्या-क्या करना है उसका लेखा-जोखा श्रावक-श्राविकाओं से करवाया।

जैन विश्व भारती के परामर्शक सुरेंद्र जैन ने श्रावक समाज के प्रति नए वर्ष की मंगलभावना व्यक्त की। शासनश्री साध्वीश्री ने नववर्ष के प्रति जागरूक रहकर अपने जीवन में आध्यात्मिक प्रयोग करने की प्रेरणा प्रदान की। अंत में मंत्रोच्चार के द्वारा मंगलपाठ का श्रवण करवाया। श्रावक समाज की उपस्थिति सराहनीय रही।



## धर्म जीवन का अनिवार्य तत्व

### कोलाघाट बंगाल।

मुनि जिनेश कुमार जी के प्रथम बार आगमन पर स्थानीय जैन समाज द्वारा भावभीना स्वागत किया गया। नगर के मुख्य मार्गों से जयघोष करते हुए पंक्तिबद्ध चलते हुए श्रावक-श्राविकाएँ व बच्चे उपस्थित थे। मुनिश्री का जैन मंदिर अंतर्गत धर्मशाला में स्वागत समारोह का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि धर्म जीवन का अनिवार्य

तत्व है। धर्म का अर्थ है—संयम, सदाचार, सहिष्णुता और नैतिकता। धर्म के बिना शांति नहीं मिल सकती और धर्म के बिना आत्मा की उन्नति संभव नहीं है, इसलिए शांति की प्राप्ति एवं आत्मोन्नति के लिए धर्म की आराधना करनी चाहिए।

जिस व्यक्ति का आचार, विचार, संस्कार और व्यवहार उत्तम होता है उसका जीवन श्रेष्ठ होता है। मन, वाणी और भोजन का संयम व्यक्ति को आरोग्य प्रदान करता है।

इस अवसर पर मुनि परमानंद जी ने कहा कि सभी को संतों की सन्निधि का अधिक-से-अधिक लाभ उठाना चाहिए। बाल मुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। इस अवसर पर उपासक मालचंद भंसाली, उपासक संजय पारख, उपासिका चंद्रकला बोथरा, पूजा बोथरा, माही जैन आदि ने अपने विचार व्यक्त किए। जैन महिला मंडल ने स्वागत गीत का संगान किया।

## काबू से बच सकते हैं, कर्मों के फल से नहीं

### झारसुगड़ा।

मुनि प्रशांत कुमार जी, मुनि कुमुद कुमार जी का झारसुगड़ा, उड़ीसा की जिला जेल में पदार्पण हुआ। जेल में सैकड़ों की संख्या में कैदियों और जेल के अधिकारियों के बीच मुनिश्री ने कहा कि जेल में आना कोई नहीं चाहता। लेकिन कोई विशेष कारण से आप लोगों को जेल में लाया गया है। इस जीवन में अथवा पिछले किसी जीवन में कोई बुरे कर्म किए होंगे, जिनकी वजह से ऐसी परिस्थितियाँ आपके सामने बनी होंगी कि आप लोगों को जेल में आना पड़ा। अब तो सभी लोगों को यह संकल्प कर लेना चाहिए कि आगे से ऐसे अपराध या ऐसी कोई प्रवृत्ति नहीं करेंगे, जिससे स्वयं को उसकी बुरी सजा भोगनी पड़े।

कानून से आदमी बच सकता है, पुलिस से भी बच सकता है, कर्मों के फल से कोई कहीं भी बच नहीं सकता। हम सबको मनुष्य शरीर के साथ पाँचों इंद्रियाँ मिली हैं, बुद्धि मिली है, बहुत कुछ कर

सकने की शक्ति मिली है। इन सभी शक्तियों का कभी दुरुपयोग नहीं करना चाहिए। इनको अच्छे कार्यों में, अपनी और दूसरों की भलाई में लगाना चाहिए।

एस०पी० राहुल जैन ने संतों की जीवनचर्या के संबंध में जानकारी देते हुए कहा कि यह आप लोगों का अहोभाग्य है कि ऐसे मोह-माया के पूर्ण त्यागी संत आपको दिशा-दर्शन देने के लिए आपके बीच आए हैं। आप लोग संतों की बताई

हुई बातों को ग्रहण करने का प्रयास करें। इस अवसर पर बड़ी संख्या में कैदियों ने शराव, गुटखा आदि नशीली चीजों का सेवन न करने की, चोरी, डकैती और किसी इंसान की हत्या न करने की प्रतिज्ञाएँ खड़े होकर ग्रहण कीं। जेल के अधिकारीगण ने मुनिश्री के स्वागत में अपने विचार व्यक्त किए। धर्मेन्द्र मुणोत ने धन्यवाद ज्ञापन किया एवं मुनिश्री द्वारा लिखित साहित्य जेल के अधिकारी को भेंट किया गया।

## शिशु संस्कार बोध परीक्षा-२०२२

### कोलकाता।

आंचलिक संयोजिका डॉ० प्रेमलता चोरड़िया के मार्गदर्शन से तथा सभाओं, संयोजकों, कार्यकर्ताओं और प्रशिक्षिकाओं के सहयोग से वृहद कोलकाता व दक्षिण बंगाल अंचल में 9७ केंद्रों में शिशु संस्कार बोध की परीक्षाएँ संपन्न हुईं।

हर केंद्र में सभा की ओर से अच्छी व्यवस्था थी तथा सभा की ओर से ज्ञानार्थियों के उत्साहवर्धन हेतु अध्यक्ष, मंत्री एवं पदाधिकारियों ने उपस्थिति दर्ज करवाई। कुल ४४९ परीक्षार्थियों ने इस आयोजन में सहभागिता दर्ज की। कार्यक्रम के आयोजन में संयोजकों, कार्यकर्ताओं व प्रशिक्षिकाओं के श्रम तथा सभा संस्थाओं की ओर से सुंदर व्यवस्था के लिए सभी के प्रति हार्दिक आभार।

◆ ज्ञान प्राप्ति के लिए बहुश्रुत की उपासना करनी चाहिए और विवेकशील व्यक्तियों से मार्गदर्शन लेना चाहिए।

— आचार्यश्री महाश्रमण



## अभातेयुप योगक्षेम योजना

अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
* श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर	5,00,000
* श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना	5,00,000
* श्री राकेश कठोटिया, लाडनू-मुंबई	5,00,000
* श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई	5,00,000
* श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा	5,00,000
* श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत	5,00,000
* श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई	5,00,000
* श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई	5,00,000
* श्री राजकुमार गौतम प्रसाद जैन, बेलपाड़ा-उड़ीसा	5,00,000
* श्री सागरमल दीपक विमल कमलेश श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	5,00,000
* श्री जैनसुख दीपक बोथरा, छपर-सिलीगुड़ी	5,00,000
* श्री बसंत नवलखा, बीकानेर	5,00,000
* श्री बिमल चोपड़ा, गंगाशहर-यमुनानगर	5,00,000
* श्रद्धानिष्ठ श्रावक केशरीमल, अनिलकुमार, संजयकुमार, सुनीलकुमार चंडालिया (गंगापुर) सूरत	5,00,000



## संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

### नामकरण संस्कार

#### दिल्ली।

पीयूष-आरती बेगवानी की सुपुत्री का नामकरण जैन संस्कार विधि से उपासक व संस्कारक विमल गुनेचा व संस्कारक पवन गिडिया ने विधि-विधान एवं मंत्रोच्चार द्वारा संपादित करवाया।

संस्कारक विमल गुनेचा ने बेगवानी परिवार का आभार व्यक्त किया। व शुभकामनाएँ दीं। बेगवानी परिवार ने पधारें हुए सभी संस्कारकों व मेहमानों का आभार व्यक्त किया।

#### विजयनगर।

उदयपुर निवासी, मुंबई प्रवासी अंकित-रश्मि भंडारी की सुपुत्री का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से संस्कारक विकास बांठिया, आशीष सिंधी एवं धीरज भादानी ने विधि-विधान एवं मंत्रोच्चार से संपन्न करवाया।

परिषद की ओर से भंडारी परिवार को मंगलभावना पत्रक एवं नामकरण पत्रक भेंट किया गया। परिवार ने तेयुप, विजयनगर का आभार व्यक्त किया।

#### पूर्वांचल-कोलकाता।

सुजानगढ़ निवासी, पूर्वांचल-कोलकाता प्रवासी आदर्श-मनीषा लुणिया के आंगन में पुत्री का जन्म हुआ। जिसका नामकरण जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक सुरेंद्र सेठिया, सह-संस्कारक अनूप गंग ने संपूर्ण मंत्रोच्चार द्वारा संपादित करवाया।

तेयुप द्वारा मंगलभावना यंत्र प्रदान किया गया तथा लुणिया परिवार के प्रति आभार ज्ञापित किया।

## नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ

#### दिल्ली।

धर्मचंद सेठिया के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से उपासक व संस्कारक विमल गुनेचा ने मंगल मंत्रोच्चार व विधिवत् रूप से संपादित करवाया।

तेयुप, दिल्ली की तरफ से सेठिया परिवार का आभार व्यक्त किया गया।

#### गंगाशहर।

महेंद्र कुमार-शीतल देवी भुगड़ी के सुपुत्र मनीष व संजय के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक देवेन्द्र डागा और विनीत बोथरा ने विधि-विधानपूर्वक मंत्रोच्चार के साथ संपन्न करवाया।

संस्कारक विनीत बोथरा ने भुगड़ी परिवार को नूतन प्रतिष्ठान की शुभकामनाएँ प्रेषित की।

## नूतन गृह प्रवेश

#### दिल्ली।

धर्मचंद-मंजू देवी सेठिया की पुत्रवधू विकास-श्वेता सेठिया के नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से उपासक व संस्कारक विमल गुनेचा, प्रकाश सुराणा व हेमराज राखेचा ने संपूर्ण विधि-विधान व मंगल मंत्रोच्चार द्वारा संपादित करवाया।

तेयुप, दिल्ली की तरफ से परिवार को मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया। इस अवसर पर पारिवारिकजनों की अच्छी उपस्थिति रही।

## 'कर्मवाद' पर रात्रिकालीन कार्यशाला का आयोजन दिवेर।

आज का इंसान दुखी क्यों? किसलिए? पड़ोसी सुखी क्यों? इसलिए कारण-निवारण पर कार्यशाला में मुनि प्रसन्न कुमार जी ने कहा कि व्यक्ति दुखी होने के अनेक कारण हो सकते हैं। किंतु मुख्य कारण हमारे ही किए कार्य शुभ-अशुभ कर्म होते हैं। अतीत के पूर्वजन्मा एवं वर्तमान के भी होते हैं। अज्ञान वरामी व्यक्ति कर्म करता है। जानते हुए भी मोहवश कर देता है। बुरे परिणामों को भी जानता है, फिर भी कर देता है। प्रत्येक प्राणी की एक दुर्बलता है कि दूसरों के सुख को देखकर भी दुखी हो जाता है।



## मनोनुशासनम्

□ आचार्य तुलसी □



### पहला प्रकरण

प्राणायाम के अनेक प्रकार हैं। किंतु वायु-शुद्धि के लिए सर्वाधिक उपयोगी और सर्वाधिक निर्दोष अनुलोम-विलोम प्राणायाम है। अनुलोम-विलोम प्राणायाम—दाएँ हाथ के अंगूठे से दाएँ नथुने को बंद कर बाएँ नथुने से श्वास लें और दाएँ नथुने से उसका रेचन करें। दाएँ हाथ की अनामिका और कनिष्ठा इन दो उँगलियों से बाएँ नथुने को बंद कर दाएँ नथुने से श्वास लें और बाएँ नथुने से उसका रेचन करें। प्रारंभ में ऐसी आठ-दस आवृत्तियाँ की जा सकती हैं, फिर धीमे-धीमे तीस तक बढ़ाई जा सकती हैं।

प्राणायाम की कालमात्रा इस प्रकार होती है—

पूरक	आठ मात्रा
रेचक	सोलह मात्रा
कुम्भक	बत्तीस मात्रा

सकुम्भक अनुलोम-विलोम प्राणायाम—प्राणायाम की इस द्वितीय भूमिका में कुम्भक किया जाना चाहिए। कुम्भक का कालमान ऊपर बताया गया है।

समूलबंध अनुलोम-विलोम प्राणायाम—इस प्रक्रिया में अनुलोम-विलोम प्राणायाम के साथ मूलबंध और जुड़ जाता है।

सोड्डीयान अनुलोम-विलोम प्राणायाम—इस प्रक्रिया में कुम्भक और मूलबंध सहित अनुलोम-विलोम प्राणायाम के साथ उड्डीयान बंध और जुड़ जाता है।

श्वास के दोष विषम और ह्रस्व श्वास से उत्पन्न होते हैं और वे मन को चंचल बनाते हैं। मन की स्थिरता के लिए श्वास को विशुद्ध बनाना नितांत आवश्यक है। साधना की भाषा में जैसा कि मैं समझ पाया हूँ श्वास और मन का गहरा संबंध है। श्वास की चंचलता मन की चंचलता को जन्म देती है और मन की चंचलता फिर श्वास को चंचल बनाती है। इस क्रम में स्थिरता कम होती चली जाती है। अतः मन की शुद्धि के लिए श्वास की शुद्धि बहुत आवश्यक है।

प्राणायाम का क्रमिक विकास—प्रारंभ में प्राणायाम के दो अंगों—पूरक और रेचक का ही अभ्यास करना चाहिए। सोमदेव सूरि ने लिखा है—

**मन्दं मन्दं क्षिपेद् वायुं, मन्दं मन्दं विनिक्षिपेत्।  
न क्वचिद् वार्यते वायुर्न च शीघ्रं प्रमुच्यते।।  
(यशस्तिलक, ३६)**

प्राणवायु को धीमे-धीमे लेना चाहिए और धीमे-धीमे छोड़ना चाहिए। वायु को न रोका जाए और न शीघ्रता से छोड़ा जाए। प्रारंभ में प्राण को रोकने का अभ्यास होता है, इसलिए उसे रोक लेने पर शीघ्रता से छोड़ने की स्थिति पैदा हो जाती है। वैसा करने में हानि होती है।

प्रारंभ में दीर्घ श्वास का अभ्यास, फिर पूरक और रेचक का अभ्यास और फिर कुम्भक का अभ्यास—यह प्राणायाम का विकासक्रम है। हठयोग में प्राणायाम के अनेक प्रकार बताए गए हैं। शारीरिक सिद्धियों के लिए उनका उपयोग भी हो सकता है किंतु ध्यान की सिद्धि के लिए उनका उपयोग हमारे हनुभव में नहीं है। ध्यान की सिद्धि के लिए उसी प्राणायाम का उपयोग होता है, जिससे प्राण सूक्ष्म बन सके। नाभि, नासाग्र, भृकुटि और मस्तिष्क में मन को केंद्रित करने से प्राण सूक्ष्म हो जाता है। कुम्भक करने से तो वह सूक्ष्म होता ही है।

रेचक और पूरक का सम्यक् अभ्यास हो जाने के बाद पाँच-दस सेकंड का कुम्भक किया जाए और वह भी चार-पाँच बार। फिर धीमे-धीमे समय और बार दोनों बढ़ाए जा सकते हैं।

जिसे मन को स्थिर करने की सामान्य अपेक्षा हो, वह दो-तीन मिनट का कुम्भक दिन-रात में दो-चार बार कर ले और जिसे विशेष साधना करनी हो, वह घंटों तक कुम्भक का अभ्यास कर सकता है।

कुम्भक जितना शक्तिशाली है, उतना ही भयंकर है। कुम्भक की विशेष साधना किसी अनुभवी साधक की देख-रेख में ही की जा सकती है। उसमें खाने, चलने, बोलने की चर्या में पर्याप्त परिवर्तन करना पड़ता है।

प्राणायाम के व्यावहारिक लाभ—पूरक से पुष्टि प्राप्त होती है। रोचक से उदर की व्याधियाँ क्षीण होती हैं। कुम्भक में आंतरिक शक्तियाँ जाग्रत होती हैं। चंद्रस्वर से गर्मी शांत होती है और सूर्यस्वर से गर्मी बढ़ती है। वायु तथा कफ के प्रकोप मिटते हैं। जो स्वर चल रहा हो, उसे रोककर विपरीत स्वर चलाने से तात्कालिक उपद्रव शांत होते हैं। दूषित प्राण-वायु से जीवन की हानि होती है और शुद्ध प्राणवायु से जीवनी-शक्ति का विकास होता है।

इंद्रियविजय, मनोविजय, कषायविजय—इन शब्दों से हम सुपरिचित हैं किंतु प्राणविजय शब्द से हम सुपरिचित नहीं हैं। जैन लोगों में एक साधारण धारणा है कि प्राणायाम हमारी परंपरा में मान्य नहीं है, महर्षि पतंजलि तथा हठयोग की परंपरा में मान्य रहा है। यह धारणा समुचित नहीं है।

आवश्यक निर्युक्ति में श्वास का निरोध न किया जाए ऐसा उल्लेख मिलता है। किंतु यह निषेध किसी विशेष स्थिति में किया गया प्रतीत होता है। भद्रबाहु स्वामी महाप्राण ध्यान की साधना कर रहे थे। उसकी आधार-भित्ति प्राणायाम है। अन्य अनेक आचार्यों ने ध्यान संवरयोग की साधना की है। उसमें भी प्राणायाम प्रमुख होता है। महाप्राण साधना या ध्यान योग की साधना में बारह-बारह वर्ष लग जाते थे। इस साधना में लगने वाले संघीय कार्य करने से विरत हो जाते थे तथा किसी प्रमादवश प्राणहानि भी हो जाती थी। संभव है इसी प्रकार के किसी कारण को ध्यान में रखकर आवश्यक निर्युक्ति में श्वासनिरोध का निषेध किया गया।

वस्तुवृत्त्या प्राणायाम जैन-परंपरा से असम्मत नहीं है। प्राणायाम के बिना प्राण-विजय नहीं हो सकती और उसके बिना इंद्रिय-विजय, मनोविजय और कषायविजय का होना साधारणतया संभव नहीं है। ध्यान की प्रत्येक पद्धति के साथ श्वास को सूक्ष्म या मंद करने का विधान मिलता है।

(क्रमशः)

## साँसों का इकतारा

□ साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा □

(१२१)

जो शूलों के पथ पर चलते रहे निरंतर उन चरणों से गति की तीव्र प्रेरणा पाएँ। नहीं आँख में था जिनके निज-पर का अंतर गीत गा रही उनके देखों दसों दिशाएँ।।

बंद हमारी पलकों को यदि खोल सको तो जीवन के मग में उतरेगा स्वयं सवेरा आस्था की अनमोल संपदा तोल सको तो अभिनव रेखाचित्र रचेगा चतुर चितेरा एक बात बतला दो तुम यदि बोल सको तो दूर हुए क्यों हमसे इतने होकर अपने सुधा घोल दो अब कण-कण में घोल सको तो कब होंगे सच देखे हमने जितने सपने अगम अगोचर रूप तुम्हारा कहाँ मिलेगा धरती नभ पर कैसे उसे खोजने जाएँ।।

जो भी आया याचक बनकर द्वार तुम्हारे खुशियों से उसका पूरा दामन भर डाला सुख रहे थे अधर प्यास से जब जन-जन के बाँटा सबको इमरत खुद ने पीकर हाला सूने-सूने से लगते सब गाँव नगर ये जिस तट पर तुम खड़े वहाँ गीतों का मेला अनिमिष नयनों से कब से सब बाट निहारें प्राणों का पंछी यह उड़ता आज अकेला मीठी यादें बसी तुम्हारी जो चितवन में घर हो या परदेश उन्हीं से जी बहलाएँ।।

(१२२)

मुट्टी में सूरज ले जनमे नभ में अनगिन चाँद उगाए। पौरुष के प्रतिमान शान से कीर्तिमान कमनीय बनाए।।

मिला निमंत्रण लहरों का तो नहीं तीर पर रहना भाया कभी नाव का लिया सहारा कभी स्वयं भुजबल अजमाया तूफानों से डरे न तिलभर संघर्षों को गले लगाया शौर्य संतुलन देख तुम्हारा कुदरत का कण-कण चकराया चुभन शूल-सी मिली भले ही बनकर फूल सदा मुसकाए।।

जग की पीड़ा को तुमने अपने अंतस की पीड़ा माना लक्ष्य तुम्हारा जीवनभर जीवन-मूल्यों की अलख जगाना बड़ी सोच ने बुना निरंतर गण-विकास का ताना-बाना आवरणों में छिपी विलक्षण प्रतिभा को तुमने पहचाना

आहत प्राण मनुजता के निज कोमल हाथों से सहलाए।।

अनुशासन के शिखर पुरुष तुम थी अद्भुत अनुशासन शैली निज पर शासन : फिर अनुशासन विधा जिंदगी की अलबेली अनुशासन आधार प्रगति का अनुशासन है चित्रावेली अनुशासन से ही सुलझाई उलझ गई जो कभी पहेली अनुशासन का वर्ष मना सबमें सात्त्विक संस्कार जगाए।।

हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर चढ़ने का संकल्प तुमहारा रुका सूर्य का रथ भी तुमने यदि उसको कर दिया इशारा पारदर्शिता देव! तुम्हारी सदा क्षितिज के पार निहारा जटिल समस्या के सागर का तुमने झट पा लिया किनारा अर्पित हैं उस अनुपमेय को आस्था की अनमोल ऋचाएँ।।

(क्रमशः)





## संबोधि

### □ आचार्य महाप्रज्ञ □ बंध-मोक्षवाद

मिथ्या-सम्यग्-ज्ञान-मीमांसा

भगवान् प्राह

(२४) एवमधर्मपक्षे ऽपि धर्माधर्मो ऽपि कश्चन।  
धर्मपक्षे स्थितः कश्चित्, त्रिविधो विद्यते जनः।।

पक्ष तीन होते हैं—(१) अधर्म-पक्ष, (२) धर्माधर्म-पक्ष, (३) धर्म-पक्ष।

इन तीन पक्षों में अवस्थित होने के कारण पुरुष भी तीन प्रकार के होते हैं—(१) अधर्मी, (२) धर्माधर्मी, (३) धर्मी।

प्राणियों के इन तीन विकल्पों का आधार आंतरिक है। भेदों की मीमांसा यहाँ अभीष्ट नहीं है। साधक की दृष्टि अंतर्मुखी होती है। वह अंतर को देखता है। महावीर ने देखा—प्राणी अभी गहन अंधकार में पड़े हुए हैं। बहुत से मनुष्य भी तम की यात्रा पर चल रहे हैं, धर्म के प्रति उनमें कोई आकर्षण नहीं है। महावीर ने कहा—वे बाल हैं, बच्चे हैं, नादान हैं, अविवेकी हैं, वे संस्कारों के पाश में बद्ध हैं। उनका केंद्र-विंदु बहिर्जगत् है।

दूसरे प्रकार के व्यक्तियों को वे कहते हैं—बाल-पंडित। ये ऐसे व्यक्ति हैं जिनमें विवेक भी है और अज्ञान भी है। ये पूर्णतया सोये भी नहीं हैं और पूर्णतया जगे भी नहीं हैं। इनके जीवन में जागरण और निद्रा दोनों चल रहे हैं, कुछ जागते हैं और कुछ सोते हैं। जागरण शुरू तो हो जाता है किंतु उसका पूर्ण विकास नहीं होता। इस दशा में ममत्व, आसक्ति, राग, द्वेष, मोह, क्लेश आदि वृत्तियाँ उठती हैं, गिरती हैं। इसलिए इस अवस्था का नाम धर्म-अधर्म पक्ष, बाल-पंडित रखा है।

तीसरा पक्ष स्पष्ट है। यहाँ चेतना अकुशल वृत्तियों से हटकर कुशल में प्रविष्ट हो जाती है। साधक अंतर्जीवन के सघन-सागर में निमग्न रहता है। आत्म-स्मृति से प्रतिक्षण जुड़ा रहता है। संतों ने इस स्मरण को ही सार कहा है—

कबिरां सुमिरन सार है, और सकल जंजाल।

आदि अंत मध्य सुमिरन, बाकी है भ्रम जाल।।

यह यात्रा धर्म की है, अनासक्ति की है और सहजता की है। इसलिए इसे धर्म-पक्ष, 'पंडित' कहा है।

(क्रमशः)

## अवबोध

### □ मंत्री मुनि सुमेरुमल 'लाडनू' □ धर्म बोध

तप धर्म

प्रश्न १२ : विकृतियाँ कितनी हैं?

उत्तर : विकृतियाँ नौ हैं—

(१) दूध, (२) दही, (३) घी, (४) तेल, (५) गुड़, (६) नवनीत, (७) मधु, (८) मद्य, (९) मांस। इनमें अंतिम चार को महाविकृतियाँ माना गया है। परंपरा से मिठाई आदि को कड़ाही विगय माना है।

प्रश्न १३ : कायक्लेश किसे कहते हैं, उसके कितने प्रकार हैं?

उत्तर : आसन आदि निरवद्य क्रिया से शरीर को साधना कायक्लेश है। इसके दस प्रकार हैं—

(१) स्थान-कायोत्सर्ग, (२) उकड़ू आसन, (३) प्रतिमा आसन, (४) वीरासन, (५) निषघा, (६) आतापना, (७) वस्त्र त्याग, (८) अकण्डूयन-खुजली न करना, (९) अनिष्टीवन-धूकने का त्याग, (१०) सर्व गात्र परिकर्म विभूषा-वर्जन इनके ७ प्रकार भी मिलते हैं।

प्रश्न १४ : कायक्लेश व परीषह में क्या अंतर है?

उत्तर : कायक्लेश स्वयं इच्छानुसार किया जाता है और परीषह सहज समागत कष्ट होता है। कायक्लेश अनासक्तिप्रधान साधना है।

प्रश्न १५ : प्रतिसंलीनता किसे कहते हैं, उसके कितने प्रकार हैं?

उत्तर : इंद्रिय, मन आदि को अंतर्मुखी बनाना प्रतिसंलीनता है। उसके चार प्रकार हैं—

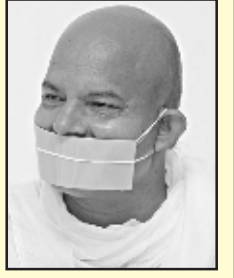
(१) इंद्रिय, प्रतिसंलीनता (२) कषाय प्रतिसंलीनता  
(३) योग प्रतिसंलीनता (४) विविक्त-शयनासन

एकांत व स्त्री, पशु आदि से रहित शयन व आसन का प्रयोग करना विविक्त शयनासन तप है।

(क्रमशः)

## उपासना

(भाग - एक)



### □ आचार्य महाश्रमण □ आचार्य तुलसी

आचार्यश्री महाप्रज्ञ

आचार्य महाप्रज्ञ कुशल प्रवचनकार होने के साथ-साथ महान लेखक, महान श्रुतधर और महान साहित्यकार हैं। उनकी सारस्वत वाणी से निकला हर शब्द साहित्य बन जाता है। उन्होंने विविध विषयों पर शताधिक ग्रंथ लिखे हैं। प्रत्येक ग्रंथ में उनका मौलिक चिंतन प्रस्फुटित हुआ है। उनके ग्रंथ जहाँ साहित्य-जगत की अमूल्य धरोहर है, वहाँ मानवता की विशिष्ट सेवा भी है। आचार्य तुलसी के वाचना-प्रमुखत्व में जैनागमों के वैज्ञानिक विश्लेषण के साथ आधुनिक संपादन उनकी विलक्षण प्रतिभा का परिचायक है, अर्हतवाणी के प्रति महान समर्पण का सूचक है।

शोध विद्वानों के लिए आचार्य महाप्रज्ञ एक विश्वकोश हैं। शायद ही कोई ऐसा विषय हो जो आचार्य महाप्रज्ञ के ज्ञानकोष्ठ में अवतरित न हुआ हो।

आचार्य महाप्रज्ञ ने प्रेक्षाध्यान एवं जीवन विज्ञान के रूप में एक विशिष्ट वैज्ञानिक साधना-पद्धति का आविष्कार किया है। इस साधना-पद्धति के द्वारा प्रतिवर्ष सैकड़ों व्यक्ति मानसिक विकृति से दूर हटकर आध्यात्मिक ऊर्जा प्राप्त करते हैं।

थोड़े शब्दों में कहा जाए तो आचार्य महाप्रज्ञ की सृजन चेतना से धर्मसंघ लाभान्वित हुआ है, जैन समाज लाभान्वित हुआ है और संपूर्ण मानव जाति लाभान्वित हुई है। आचार्य महाप्रज्ञ ने अहिंसा यात्रा के माध्यम से जन-जन में नैतिक चेतना जागरण का शंखनाद किया है।

संप्रदाय-भेद

विचार का इतिहास जितना पुराना है, लगभग उतना ही पुराना विचार-भेद का इतिहास है। विचार व्यक्ति-व्यक्ति की ही उपज होता है, किंतु संघ में रूढ़ होने के बाद संघीय कहलाता है।

तीर्थंकर-वाणी जैन-संघ के लिए सर्वोपरि प्रमाण है। वह प्रत्यक्ष दर्शन है, इसलिए उसमें तर्क की कर्कशता नहीं है। वत तर्क से बाधित भी नहीं है। वह सूत्ररूप है। उसकी व्याख्या में तर्क का लचीलापन आया है। भाष्यकार और टीकाकार प्रत्यक्षदर्शी नहीं थे। उन्होंने सूत्र के आशय को परंपरा से समझा। कहीं समझ में नहीं आया, हृदयंगम नहीं हुआ तो अपनी युक्ति और जोड़ दी। लंबे समय में अनेक संप्रदाय बन गए। श्वेतांबर और दिगंबर जैसे शासन-भेद हुए। भगवान् महावीर के समय में कुछ श्रमण वस्त्र पहनते, कुछ नहीं भी पहनते। भगवान् महावीर स्वयं वस्त्र नहीं पहनते थे। वस्त्र पहनने से मुक्ति होती ही नहीं या वस्त्र नहीं पहनने से मुक्ति होती है, ये दोनों बातें गौण हैं। मुख्य बात है राग-द्वेष से मुक्ति। जैन परंपरा का भेद मूल तत्त्वों की अपेक्षा ऊपरी बातों या गौण प्रश्नों पर अधिक टिका हुआ है।

दीर्घकालीन परंपरा में विचार-भेद होना अस्वाभाविक नहीं है। जैन परंपरा में भी ऐसा हुआ है। आमूलचूल विचार-परिवर्तन होने पर कुछ जैन साधु निर्ग्रन्थ शासन को छोड़कर अन्य शासन में जाकर वहाँ श्रमण बन गए। गोशालक भी उनमें से एक था। ऐसे श्रमणों को निहव की संज्ञा नहीं दी गई। निहव उन्हीं साधुओं को कहा गया, जिनका चालू परंपरा के साथ किसी एक विषय में मतभेद हो जाने के कारण वे वर्तमान शासन से पृथक् हो गए, किंतु किसी अन्य धर्म को स्वीकार नहीं किया। इसलिए उन्हें अन्यधर्मी न कहकर, जैन शासन के निहव (किसी एक विषय का अपलाप करने वाले) कहा गया है। इस प्रकार के निहव सात हुए हैं। इनमें से दो निहव (जमाली और तिष्यगुप्त) भगवान् महावीर की कैवल्य-प्राप्ति के बाद हुए हैं और शेष पाँच निर्वाण के बाद। इन सब निहवों का अस्तित्व-काल भगवान् महावीर की कैवल्य-प्राप्ति के चौदह वर्ष से निर्वाण के बाद पाँच सौ चौरासी वर्ष तक रहा। उनका संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है—

(१) बहुरतवाद

जमाली पहला निहव था। वह क्षत्रिय-पुत्र और भगवान् महावीर का दामाद था। माँ-बाप के अगाध प्यार और अतुल ऐश्वर्य को ठुकरा कर वह निर्ग्रन्थ बना। भगवान् महावीर ने स्वयं उसे प्रव्रजित किया। पाँच सौ व्यक्ति उसके साथ थे। मुनि जमाली अब आगे बढ़ने लगा। ज्ञान, दर्शन और चारित्र्य की आराधना में अपने-आप को लगा दिया। सामायिक आदि ग्यारह अंग पढ़े। वह विचित्र तप-कर्म उपवास, बेला, तेला यावत् अर्द्ध मास और मास की तपस्या से आत्मा को भावित करते हुए विहार करने लगा।

(क्रमशः)





## नववर्ष मंगलपाठ एवं 'धर्म: जीवन का अभिन्न स्वरूप' कार्यशाला का आयोजन

### हैदराबाद।

टीपीएफ, हैदराबाद के तत्वावधान में नववर्ष मंगलपाठ एवं चेस्था सुराणा द्वारा संपादित 'धर्म: जीवन का अभिन्न स्वरूप' विषय पर कार्यशाला डीवी कॉलोनी तेरापंथ भवन में आयोजित की गई। टीपीएफ द्वारा समायोजित इस कार्यक्रम में औरंगाबाद से पधारी मुख्य वक्ता चेस्था सुराणा ने बताया कि कैसे हम धर्म को दैनिक कार्यों के माध्यम से प्राथमिकता दे सकते हैं। उन्होंने बताया कि बचपन से हमें अपने बच्चों को धर्म के बारे में जानकारी देनी चाहिए। ताकि वो सही दिशा में अपनी मंजिल की तरफ बढ़ सकें।

कार्यक्रम की शुरुआत नवकार मंत्र के उच्चारण से हुई। टीपीएफ के मंत्री अणुव्रत सुराणा ने सभी का स्वागत करते हुए कार्यक्रम की रूपरेखा रखी एवं टीपीएफ के आगामी कार्यक्रम साइक्लोथोन एवं कैरियर काउंसलिंग के बारे में जानकारी दी। साउथ जोन अध्यक्ष मोहित बेद, तेयुप अध्यक्ष वीरेंद्र घोषल, सिकंदराबाद सभा के मंत्री सुशील संचेती एवं महिला मंडल अध्यक्ष अनिता गिडिया ने कार्यक्रम के प्रति शुभकामनाएं प्रदान की।

उपासिका बहनों में चंद्रा सुराणा, सरोज सुराणा, रंजु बेद, अंजू बेद, सुमन सेठिया, हर्षलता दुधोड़िया, मंजु दुगड़ एवं

रीटा सुराणा की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम का संचालन सहमंत्री निधि जैन एवं निखिल कोटेचा ने किया। कार्यक्रम में लगभग 950 सामाजिक बंधुओं की उपस्थिति रही। कार्यक्रम में टीपीएफ राष्ट्रीय टीम के सदस्य नवीन सुराणा, प्रोजेक्ट चेररमैन नॉलेज बैंक दीपक संचेती, प्रोजेक्ट चेररमैन, ओर्गेनाइजेशन डेवलेपमेंट ऋषभ दुगड़ की उपस्थिति रही। अंत में तेयुप के मंत्री नीरज सुराणा ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम के सफल आयोजन में कंदर्प दुधोड़िया, अरिहंत गुजरानी, निखिल कोटेचा, अनुष बंबोली का विशेष श्रम रहा।

## नववर्ष वृहद मंगलपाठ कार्यक्रम

### चेन्नई।

तेरापंथ सभा, चेन्नई के तत्वावधान में नववर्ष के शुभागमन पर महा मंगलपाठ का आयोजन साध्वी मंगलप्रज्ञा के सान्निध्य में किया गया। साध्वीश्री जी ने कहा कि नववर्ष पर सहज ही नव्यता का स्फूर्ण होता है। जो हर-क्षण रमणीयता को प्राप्त करता है वह उल्लास पाता है। आनंद, शक्तिमय जीवन के लिए अपनी विचारधारा पर नया प्रयोग करना चाहिए। नववर्ष पर विशेष संकल्प होना चाहिए, हमारी सहयोग भावना, औदार्य भाव का विकास होता रहे। विशेष संकल्प सूत्रों के साथ अपने जीवन

की आभा को सतरंगी बनाएँ। पुरुषार्थ के दीप जलाकर जीवन पथ को रोशन करें। कार्यक्रम का प्रारंभ साध्वीवृंद के गीत से हुआ। साध्वी राजुलप्रभा जी ने कहा कि हमें विशेष संकल्पों के साथ नववर्ष की अगवानी करनी चाहिए। नई प्रेरणा प्राप्त कर जीवन प्रांगण को सरसब्ज बनाने का यह महत्त्वपूर्ण अवसर है।

कार्यक्रम के अध्यक्ष, चेन्नई तेरापंथ सभा के अध्यक्ष उगमराज सांड, तेरापंथ सभा के पूर्व अध्यक्ष मुख्य अतिथि प्यारेलाल पितलिया, तेमम की अध्यक्ष पुष्पा हिरण ने नववर्ष की शुभकामनाएँ देते हुए विचार

व्यक्त किए। तेमम, तेयुप एवं ज्ञानशाला के बच्चों ने प्रस्तुति दी। गुंदूर से समागत देवराज छाजेड़ ने भावना प्रस्तुत की।

समारोह में चेन्नई के अतिरिक्त गुंदूर एवं ओंगोल के श्रावकों की उपस्थिति रही। मनोहर हिरण, महावीर डूंगरवाल, दिलीप देवड़ा, अशोक मांडोट, विवेक बच्छावत, निरंजन सियाल आदि अनेक श्रावक सपरिवार संभागी बने। कार्यक्रम का संचालन तेरापंथ सभा के सहमंत्री देवीलाल हिरण ने किया। आभार ज्ञापन सभा के पूर्व मंत्री राजेंद्र खांटेड ने किया।

## आध्यात्मिक अनुष्ठान एवं वृहद मंगलपाठ

### कोलाघाट बंगाल।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में नववर्ष के प्रथम दिन प्रवचन, अनुष्ठान एवं वृहद मंगलपाठ कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर बृहत्तर कोलकाता, खड़गपुर, हल्दिया, बालेश्वर बारीपदा, कटक, बेहतंटी, जाजपुर रोड आदि क्षेत्रों से बड़ी संख्या में श्रद्धालुगण उपस्थित थे।

इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि संसार में तीन प्रकार के

व्यक्ति होते हैं—जीवन को चलाने वाले, जीवन को बनाने वाले और जीवन को संवारने वाले। जीवन को चलाने वाले बहुत हैं, बनाने वाले उससे कम हैं, लेकिन जीवन को संवारने वाले विरले ही होते हैं।

मुनिश्री ने आगे कहा कि जो दूसरों का भला करता है उसको लाभ स्वत ही हो जाता है। सुविधावादी मनोवृत्ति समस्याएँ उत्पन्न करती है, इसलिए स्वावलंबन व परिश्रमशीलता का जीवन जीने का प्रयास

करना चाहिए।

कार्यक्रम का शुभारंभ बाल मुनि कुणाल कुमार जी ने किया। स्वागत भाषण पूजा बोधरा ने दिया। कोलाघाट जैन समाज की बहनों ने सुंदर प्रस्तुति के माध्यम से मुनिश्री का स्वागत किया। तेरापंथी सभा, कोलकाता के अध्यक्ष अजय भंसाली ने अपने विचार व्यक्त किए। आभार ज्ञापन आसकरण बैगाणी ने किया। संचालन मुनि परमानंद जी ने किया।

## भगवान पार्श्वनाथ का २७ दिन जप संपन्न

### नोखा।

लयबद्ध, एक साथ, एक समय पर भगवान पार्श्वनाथ का जप २७ दिन बराबर शासन गौरव साध्वी राजीमती जी के सान्निध्य में किया गया।

जप अनुष्ठान में 'उवस्सगहंरम' का पाठ व भगवान पार्श्व स्तुति आदि लयबद्ध किया गया। साध्वी समताश्री जी, साध्वी कुसुमप्रभा जी, साध्वी पुलकितयशा जी ने जप की महत्ता पर प्रकाश डाला।

जप संपन्नता पर 'स्वास्तिक' आकार में प्रतियोगिता एवं 900 आयंबिल तप किए। भाई-बहनों ने उत्साह से भाग लिया। एक ध्यान, एक स्थान, एक समय पर एक बार खाना आयंबिल तप कहलाता है। महिला मंडल अध्यक्ष मंजु बेद एवं महिलाओं ने व्यवस्था का दायित्व संभाला।

## पिछले वर्ष में हुई गलतियों के लिए माँगे क्षमा

### चंडीगढ़।

नववर्ष में अपनी सोच की दृष्टि को विशाल बनाएँ क्योंकि जैसे विशाल सागर में किसी भी तरह का पानी मिल जाए वह सागर ही कहलाता है और वह पानी अपना अस्तित्व सागर के सामने खोकर अपने आपको सागर बना लेता है। विनम्र बनें और माफ करना सीखें, ज्यादा गुस्सा आता है तो उसे पीना सीखें, अपनी जिम्मेदारियाँ पहचानें और उन्हें निभाना सीखें। इसलिए विचार करें और नए साल की शुरुआत नए प्रण से करें। यह शब्द मनीषी संत मुनि विनय कुमार जी 'आलोक' ने व्यक्त किए।

मुनिश्री ने मंत्रोच्चार के साथ कार्यक्रम प्रारंभ किया। कार्यक्रम में जस्टिस एस०एन० अग्रवाल, संजीव जैन महानिरीक्षक। ट्राईसिटी के भाई-बहन बड़ी संख्या में उपस्थित थे।



## ज्ञानशाला के विविध आयोजन



### हैदराबाद

महासभा, ज्ञानशाला प्रकोष्ठ एवं तेरापंथी सभा, सिकंदराबाद के तत्वावधान में ज्ञानशाला ज्ञानार्थी परीक्षा-२०२२ का आयोजन संपन्न हुआ। पूरे देशभर में और विदेशी केंद्रों में भी एक साथ संचालित की जाने वाली इस वार्षिक परीक्षा में हैदराबाद के कुल ८ परीक्षा केंद्र स्थापित किए गए। सिकंदराबाद तेरापंथी सभा के अध्यक्ष बाबूलाल बेद, महिला मंडल अध्यक्ष अनिता गिडिया, तेयुप अध्यक्ष वीरेंद्र घोषल, ज्ञानशाला की आंचलिक संयोजक सीमा दस्साणी, क्षेत्रीय संयोजक संगीता गोलछा आदि गणमान्य पदाधिकारियों की उपस्थिति में हिमायत नगर सभा भवन में प्रश्न-पत्र खोले गए।

मुख्य परीक्षा व्यवस्थापक पुष्पा बरडिया, परामर्शदाता अंजू बेद व सभा के पदाधिकारियों की उपस्थिति में डी०वी० कॉलोनी भवन में प्रश्न पत्र खोले गए। सभी परीक्षा केंद्रों में सभा के प्रतिनिधियों और कार्यसमिति सदस्यों की साक्षी में परीक्षकों द्वारा प्रश्न-पत्र खोले गए।

इन वार्षिक मौखिक परीक्षाओं में २५७ ज्ञानार्थियों ने सहभागिता दर्ज कराई।

### कांटाबाजी

स्थानीय तेरापंथ भवन में शिशु संस्कार बोध परीक्षा का आयोजन हुआ। तेरापंथी सभा अध्यक्ष युवराज जैन, सचिव सुमित जैन, ज्ञानशाला प्रभारी संजय जैन, मुख्य प्रशिक्षिका ममता जैन की उपस्थिति में प्रश्न-पत्र खोला गया। ४२ ज्ञानार्थियों ने भाग-१ से लेकर ५ तक की परीक्षा दी। भाग-१ में २२, भाग-२ में ४, भाग-३ में ५, भाग-४ में ६, भाग-५ में २ ने परीक्षा दी।

नमस्कार महामंत्र के मंगल उच्चारण से उपक्रम प्रारंभ हुआ। परीक्षा कार्य प्रशिक्षिकागण गंगा जैन, पूजा जैन, सुनीता

जैन, मनीषा जैन, सपना जैन, ममता जैन ने पूरा किया।

व्यवस्थापिका स्मिता जैन ने नियमानुसार परीक्षा के आयोजन को पूरा कराया। कांटाबाजी ज्ञानशाला में ६० बच्चे रजिस्टर्ड हैं।

### राजनगर

राजनगर के ज्ञानार्थियों की परीक्षा भिक्षु बोधि स्थल में आयोजित की गई। ज्ञानशाला, राजनगर संयोजिका संगीता कोठारी ने बताया कि मुख्य प्रशिक्षिका सीमा मांडोट और सह-संयोजिका उषा कावडिया की उपस्थिति में नमस्कार महामंत्र से ज्ञानशाला परीक्षा का शुभारंभ हुआ। जिसमें ६७ ज्ञानार्थियों ने शिशु संस्कार बोध भाग-१ से ५ तक के तथा ज्ञानार्थियों ने नर्सरी व पास आउट बच्चों ने प्रतिक्रमण की परीक्षा दी। परीक्षा केंद्र का निरीक्षण क्षेत्रीय प्रभारी विकास मादरेचा ने किया। तत्पश्चात ज्ञानशाला ज्ञानार्थियों की उपस्थिति दर्ज कर गई एवं केंद्र व्यवस्थापक सीमा मांडोट ने परीक्षा संबंधी जानकारी एवं नियमावली बताई।

सीमा चपलोट, अनामिका सहलोट, राजुला मादरेचा, रंजना चोरडिया, संगीता सामर, ममता चपलोट, उषा कावडिया, वनिता बाफना, नेकी बडाला, वंदना सहलोट, आशा सोनी, पंछी चपलोट, हंसा मेहता सहित सभी प्रशिक्षिकाओं द्वारा ज्ञानार्थियों की मौखिक परीक्षाएँ ली।

### विजयनगर

तेरापंथी सभा, विजयनगर के तत्वावधान में ज्ञानशाला के बच्चों की वार्षिक शिशु संस्कार की परीक्षाएँ आयोजित की गईं। जिसमें कुल ७५ बच्चों ने परीक्षाएँ दीं। ज्ञानशाला की संयोजिका मनीषा घोषल, मुख्य प्रशिक्षक मधु बेगवानी ने सुंदर ढंग से परीक्षा हो सके उसकी व्यवस्था की।

प्रश्न पत्रों को खोलते समय कर्नाटक के सहप्रभारी सुरेश नाहर, विजयनगर सभा के अध्यक्ष प्रकाश गांधी, मंत्री मंगल कोचर, तेयुप के उपाध्यक्ष विकास बांठिया, सहमंत्री संजय भटेवरा, कमलेश चोपड़ा, संगठन मंत्री कुलदीप बागरेचा, महिला मंडल की मंत्री सुमित्रा बरडिया, सहमंत्री अंजू सेठिया एवं ज्ञानशाला की सभी प्रशिक्षिकाओं की उपस्थिति रही। कुल 9६ प्रशिक्षिकाओं ने बच्चों की परीक्षा ली।

♦ सत्य को स्वीकारने का साहस भी महानता है।

— आचार्यश्री महाश्रमण



## तेयुप के विविध कार्यक्रमों के आयोजन

### सीपीएस क्लास का आयोजन

#### घाटकोपर।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप, घाटकोपर द्वारा सीपीएस क्लास का आयोजन तेरापंथ सभा भवन में किया गया।

एक सप्ताह तक चली इस क्लास में २२ जनों ने भाग लिया। सीपीएस ट्रेनर अरविंद पोखरना, खुशी गांधी एवं पायलट ट्रेनर अनिता गांधी ने सभी को कॉन्फिडेंस के साथ कैसे बोला जाए इसकी विधि के साथ ट्रेनिंग दी। कार्यक्रम का अंतिम दिवस प्रेजुएशन सेरेमनी के रूप में मनाया गया,

जिसमें सभी सहभागियों ने अपने वक्तव्य दिए एवं अपनी भावनाओं को भी व्यक्त किया।

अध्यक्षता अभातेयुप सहमंत्री भूपेश कोठारी ने की। मुख्य अतिथि सीनियर प्रेक्षा प्रशिक्षक नेमीचंद जैन, अतिथि विशेष मुंबई सभा एवं चातुर्मास व्यवस्था समिति अध्यक्ष मदनलाल तातेड़, मुख्य नियोजक मनोहर गोखरू, अभातेयुप के सदस्य, मुंबई सभा कोषाध्यक्ष हस्तीमल डांगी, घाटकोपर सभा अध्यक्ष शांतिलाल वाफना, मंत्री कमल

कोठारी, कोषाध्यक्ष शांतिलाल धाकड़, महिला मंडल, किशोर मंडल एवं कन्या मंडल की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम को सफल बनाने में तेयुप अध्यक्ष राजेश सिंघवी एवं उनकी पूरी टीम का विशेष श्रम रहा। आभार ज्ञापन तेयुप मंत्री रूपेश धाकड़ ने किया। इस आयोजन में सीपीएस के राष्ट्रीय प्रभारी सतीश पोरवाड़, सहप्रभारी कुलदीप कोठारी, मुख्य प्रशिक्षक अरविंद मांडोत, तेयुप घाटकोपर प्रभारी नरेश चपलोत का विशेष मार्गदर्शन रहा।

### फन फेस्ट कार्यक्रम का आयोजन

#### पर्वत पाटिया।

तेयुप के निर्देशन में तेरापंथ किशोर मंडल द्वारा फन फेस्ट कार्यक्रम मनाया गया। किशोर मंडल के सदस्यों द्वारा इस कार्यक्रम में आठ अलग-अलग प्रकार के खेल का आयोजन कर पधारे हुए सभी मेहमानों का मनोरंजन किया साथ ही ३२ प्रकार के भिन्न-भिन्न व्यंजनों की छोटी-छोटी दुकानों का भी आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में आए छोटे-छोटे बच्चों के लिए उछाल पट साधन का आयोजन भी किया गया। इसी के साथ दो हास्य व्यक्तिचित्र (मोटू और पतलू) को आमंत्रण दिया जो कि पहले ही अभातेयुप के निर्देशन में सभी परिषदों की भेंट कर चुके हैं।

किशोर मंडल द्वारा संचालित इस कार्यक्रम में सबसे अच्छा व्यंजन बनाने वाले के लिए ३ पुरस्कार तथा ४ भाग्यशाली कूपन

पुरस्कार का आयोजन भी किया।

फन फेस्ट के इस कार्यक्रम के अवसर पर तेरापंथी सभा के सदस्यगण, तेयुप पदाधिकारीगण, अभातेयुप एवं तेयुप कार्यकारिणी सदस्य, महिला मंडल तथा ज्ञानशाला के ज्ञानार्थी, प्रशिक्षिकाएँ एवं समाज के अग्रणी गणमान्य सदस्यों की विशेष उपस्थिति रही। कार्यक्रम में लगभग २१०० से भी ज्यादा लोगों की उपस्थिति रही।

### अभिरुचि शिविर का समापन समारोह

#### भीलवाड़ा।

तेयुप के तत्वावधान में 'णमो हॉबी क्लासेज' द्वारा लगाए गए अभिरुचि शिविर का समापन समारोह किया गया। जिसमें प्रशिक्षकों द्वारा दिए गए प्रशिक्षण की मनमोहक प्रस्तुतियाँ बच्चों द्वारा दी गई तथा बच्चों द्वारा इस शिविर में बनाए गए आर्टिकल की प्रदर्शनी भी लगाई गई।

शिविर प्रभारी वनिता भानावत ने बताया कि इस शिविर में लोकेश जोशी, कृतिका उदावत, शिल्पा जैन, पायल मूंदड़ा, मोनिका गुर्जर, ज्योति जैन, चंडालिया, रीना मेडतवाल, शकुंतला शर्मा द्वारा बच्चों को प्रशिक्षण दिया गया।

कार्यक्रम में तेयुप, भीलवाड़ा के अध्यक्ष कमलेश सिरोहिया, मंत्री राजू कर्णावट, सभा अध्यक्ष जसराज चोरड़िया, योगेश चंडालिया, निर्मल गोखरू, तेमम अध्यक्ष मीना बाबेल सहित कई सम्माननीय सदस्यों की उपस्थिति रही। आभार ज्ञापन शिविर प्रभारी संजय भानावत ने किया।

### अभिनव सामायिक का आयोजन

#### सूरत।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप, सिटीलाइट, सूरत द्वारा नववर्ष का प्रारंभ मुनि उदित कुमार जी स्वामी के सान्निध्य में अभिनव सामायिक उत्सव विश्व मैत्री का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया।

मुनि उदित कुमार जी ने एक दृष्टांत के माध्यम से जीवन में आध्यात्मिक एवं नैतिकता के मूल्यों को अभिनव एवं रोचक तरीके से उल्लेखित किया एवं जैन सामायिक फेस्टिवल का शुभारंभ किया। मुनि उदित कुमार जी ने एवं सभी संतों ने क्रमशः सामूहिक रूप से महामंत्र एवं मंत्रों का जाप करवाया।

मुनि उदित कुमार जी के सान्निध्य में अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप सिटीलाइट सूरत, तेरापंथी सभा, ट्रस्ट बोर्ड, तेमम, तेरापंथ किशोर मंडल, तेरापंथ कन्या मंडल, अणुव्रत समिति, टीपीएफ आदि संस्थाओं के पदाधिकारियों की उपस्थिति रही। लगभग १००८ सामायिक हुई।

### सेवा के बढ़ते कदम

#### विजयनगर।

तेयुप, विजयनगर द्वारा सेवा के उपक्रम के अंतर्गत प्रायोजक परिवार राजेंद्र श्रेयांस गोलछा गंगाशहर-बैंगलोर द्वारा गरीब और बेसहारा लोगों को खाना खिलाने की व्यवस्था की गई।

इस अवसर पर तेयुप, विजयनगर अध्यक्ष श्रेयांस गोलछा, संगठन मंत्री कुलदीप बागरेचा, कार्यकारिणी सदस्य देवांग बेद, पंकज कोचर, मनीष श्यामसुखा, संजय वाफना, सेवाकार्य संयोजक दिनेश मेहता ने उपस्थित होकर सेवाकार्य में अपनी सहभागिता निभाई।

### सेवा कार्य

#### सेलम।

अभातेयुप द्वारा निर्देशित सेवा-संस्कार और संगठन के अंतर्गत नीलवरपट्टी स्थित केजीवीपी रेजिडेंशियल ऑफर्नेज, सेलम में कपड़े वितरण किए गए। इस कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से की गई। प्रवीन संचेती, अश्विन सेठिया, पंकज लुंकड़, विनीत नाहटा, प्रजित जैन ने १५० छात्रों को कपड़े वितरण किए।

## तेयुप के विविध कार्यक्रमों के आयोजन

### भिक्षु धम्म जागरण

#### साउथ हावड़ा।

तेयुप, साउथ हावड़ा द्वारा महामना भिक्षु के सुदी तेरस के उपलक्ष्य में भजन संध्या का आयोजन मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में कोलाघाट के जैन मंदिर में किया गया। अध्यक्ष बीरेंद्र बोहरा ने महामना आचार्यश्री भिक्षु को याद करते हुए उपस्थित सभी का स्वागत अभिनंदन किया।

साउथ हावड़ा की महाश्रमण भजन मंडल ने आचार्य भिक्षु के प्रति अपनी अभिव्यक्ति सुमधुर भजनों एवं गीतिकाओं के माध्यम से दी। उपस्थित श्रावक समाज ने भी गीतिका का संगान किया।

उपाध्यक्ष हितेंद्र बैद, सहमंत्री एवं भिक्षु धम्म जागरण के पर्यवेक्षक राहुल दुगड़, संगठन मंत्री रोहित बैद, भिक्षु धम्म जागरण के संयोजक हर्ष बाटिया, जितेंद्र बैद, अमित चोरड़िया, कार्यसमिति सदस्य अजीत दुगड़ सहित अनेक गणमान्य जनों ने उपस्थित होकर भजनों की प्रस्तुति दी। पर्यवेक्षक राहुल दुगड़ ने मुनिश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। भिक्षु धम्म जागरण के वार्षिक प्रायोजक उषा देवी कोठारी एवं समस्त कोठारी परिवार का बहुत-बहुत आभार।

#### कांदिवली।

तेयुप, कांदिवली और कांदिवली भिक्षु भजन मंडल द्वारा आचार्य भिक्षु की मासिक तेरस पर भिक्षु भजन संध्या का आयोजन तेयुप, कांदिवली के भूतपूर्व मंत्री सौरभ दुधोड़िया के निवास स्थान पर आयोजित की गई। इस अवसर पर भिक्षु भजन मंडल के सुमधुर गायक अशोक हिरण ने सुंदर भजनों की प्रस्तुति दी।

इस अवसर पर तेरापंथी सभा, मुंबई के सहमंत्री अशोक कोठारी, तेरापंथी सभा, कांदिवली के अध्यक्ष एवं प्रेक्षा प्रशिक्षक पारसमल दुगड़, मंत्री अशोक हिरण, मुंबई महिला मंडल की भूतपूर्व अध्यक्षा भारती सेठिया, महिला मंडल संयोजिका नीतू नाहटा सहित अनेक गणमान्य लोगों की उपस्थिति रही।

#### राजाजीनगर।

साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में आचार्यश्री भिक्षु की मासिक त्रयोदशी के उपलक्ष्य में 'एक शाम भिक्षु के नाम' धम्म जागरण का आयोजन स्थानीय तेरापंथ भवन में तेयुप द्वारा किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई। साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी ने आचार्यश्री भिक्षु की दीक्षा के पूर्व प्रसंग एवं अन्य दृष्टांत सुनाते हुए सुमधुर गीत का संगान किया। साध्वी दक्षप्रभा जी ने गीतिका प्रस्तुत की। तेयुप अध्यक्ष अरविंद गन्ना ने सभी का स्वागत किया। सभा अध्यक्ष रोशनलाल कोठारी ने अपने विचार व्यक्त किए। धम्म जागरण संजय मांडोत, अनिमेष चौधरी, रेनू कोठारी ने वातावरण को भिक्षुमय बना दिया।

इस अवसर पर अनेक गणमान्यजनों की उपस्थिति रही। मंच संचालन तेयुप मंत्री कमलेश चोरड़िया ने किया एवं आभार संगठन मंत्री अजिंक्य चौधरी ने व्यक्त किया। धम्म जागरण को सफल बनाने में संयोजक ललित मुणोत एवं लोकेश बोहरा का श्रम नियोजित हुआ।

### सेवा की ओर बढ़ते कदम

#### विजयनगर।

तेयुप, विजयनगर द्वारा सेवा के उपक्रम के अंतर्गत गीता आश्रम बापूजी नगर में देवप्रताप भंडारी चाड़वास, बैंगलोर के सहयोग से अनाथ बच्चों की नाश्ते की व्यवस्था की गई। गीता आश्रम के मैनेजमेंट ने तेयुप की प्रशंसा की।

तेयुप, विजयनगर पूर्व अध्यक्ष महेंद्र टेबा, सेवाकार्य संयोजक दिनेश मेहता एवं भंडारी परिवार से पारिवारिकजनों ने उपस्थित होकर बच्चों के सेवाकार्य में अपनी सहभागिता निभाई।



## अभिनव सामायिक फेस्टिवल के विविध आयोजन

### नालासोपारा (मुंबई)

तेयुप द्वारा आयोजित, नूतन वर्षाभिनंदन के अवसर पर अभिनव सामायिक फेस्टिवल तेरापंथ भवन के प्रांगण में आयोजित किया गया। तेयुप अध्यक्ष किशन कोठारी ने सभी का स्वागत किया। उपासिका बहन मंजु बाफना, प्रेमा धाकड़, लक्ष्मी मेहता ने नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत की। उपासिका बहनों ने सामायिक के महत्त्व को समझाते हुए कहा कि स्वाध्याय का अगर हम विशिष्ट संदर्भ में अर्थ लें तो इसका विशिष्ट अर्थ है—आत्मचिंतन। अपने अंदर के बारे में जानना।

तीनों उपासिका बहनों ने विधिवत् सामायिक के महत्त्व को कहानी आदि के द्वारा समझाते हुए अभिनव सामायिक संपन्न करवाई। नमस्कार महामंत्र, लोगस्स, अ, सि, आ, ऊ, सा आदि मंत्रोच्चारण करवाया। टोटल २६ सामायिक हुई।

सभा अध्यक्ष लक्ष्मीलाल मेहता, मंत्री पारस बाफना, अनिल परमार, कमलेश खाब्या, चंद्र प्रकाश धाकड़, पंकज धाकड़, ललित इटोडिया, महिला मंडल संयोजिका वनीता सोलंकी, हंसा हिरण, पुष्पा सोलंकी, तेयुप से मनोज सोलंकी सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं गणमान्यजन उपस्थित थे।

तेरापंथी सभा, महिला मंडल, तेयुप, किशोर मंडल, कन्या मंडल एवं ज्ञानशाला परिवार एवं पूरे समाज की उपस्थिति रही।

### भीलवाड़ा

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप, भीलवाड़ा ने नववर्ष पर अभिनव सामायिक का आयोजन शासनश्री मुनि हर्षलाल जी के सान्निध्य में आयोजित हुआ। कार्यक्रम के अंतर्गत लगभग २०० सामायिक हुई। शासन गौरव ने अपने वक्तव्य में कहा कि जैन धर्म में सामायिक का विशेष महत्त्व माना जाता है। सामायिक को समता की साधना और आत्मा को निर्मल बनाने का महत्त्वपूर्ण उपक्रम बताया गया है। सामायिक में व्यक्ति ४८ मिनट के लिए सारे सांसारिक कार्यों का त्याग करके अध्यात्म साधना एवं समता में लीन हो जाता है। मुनि यशवंत कुमार जी ने नाना प्रकार के जप का प्रयोग करवाते हुए नववर्ष का वृहद मंगलपाठ शासनश्री मुनि हर्षलाल जी से सुना।

तेयुप अध्यक्ष कमलेश सिर्रोहिया ने अभिनव सामायिक कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी दी।

मंच संचालन तेयुप के कोषाध्यक्ष सुरेश चोरडिया ने किया। तेरापंथी सभा के अध्यक्ष जसराज चोरडिया, टीपीएफ के अध्यक्ष करण सिंह सिंघवी, भिक्षु विहार सेवा संस्था के मंत्री दिनेश गोखरू ने स्वागत एवं

अभिनव सामायिक के बारे में अपने विचार व्यक्त किए।

इस अवसर पर तेयुप के उपाध्यक्ष प्रदीप आंचलिया, मंत्री राजू कर्णावट, संगठन मंत्री दिनेश रांका, संयोजक सुशील श्रीश्रीमाल एवं तेरापंथ सभा, तेयुप, महिला मंडल, अणुव्रत समिति और बड़ी संख्या में समाजजन एवं संस्था के सदस्यगण उपस्थित थे। प्रभारी नरेंद्र नाहर ने सभी का आभार व्यक्त किया।

### इचलकरंजी

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा अभिनव सामायिक का आयोजन स्थानीय तेरापंथ भवन में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में इचलकरंजी समाज के एवं चोकले के लगभग २५० श्रावक-श्राविकाओं ने सामायिक साधना का लाभ उठाया।

तेयुप के अध्यक्ष महेश पटवारी ने उपस्थित सभी का अभिनंदन किया और सभी को नववर्ष की शुभकामनाएँ दी।

मुनि अर्हंत कुमार जी के सान्निध्य में यह अभिनव सामायिक फेस्टिवल संपन्न हुआ। कार्यक्रम में इचलकरंजी, कोल्हापुर, जयसिंहपुर, माधव नगर सांगली, तासगाँव एवं बैंगलुरु के श्रावकगण उपस्थित थे।

### डोंबिवली

शासनश्री साध्वी जिनरेखा जी के सान्निध्य में डोंबिवली में अभिनव सामायिक का आयोजन हुआ। साध्वी जिनरेखा जी ने कहा कि बीते वर्ष का आत्मवलोकन करें और नववर्ष में नूतन संकल्पों को स्वीकार कर नए कीर्तिमान स्थापित करें। उन्होंने त्रिपदी वंदना, जप, ध्यान के प्रयोग करवाए। तेयुप अध्यक्ष ललित मेहता, निवर्तमान अध्यक्ष सुरेश बैद, भरत कोठारी, दिनेश श्रीश्रीमाल, श्रीपाल मेहता, संजय खाब्या, सभा के कोषाध्यक्ष कांतिलाल कोठारी सहित अणुव्रत समिति से हेमलता मूणोत, महिला मंडल संयोजिका किरण कोठारी एवं संयोजक जीवन सिंघवी उपस्थित रहे।

### जीन्द

तेरापंथ सभा भवन में अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप, जीन्द द्वारा अभिनव सामायिक फेस्टिवल का कार्यक्रम आयोजित किया गया। तेममं की अध्यक्षता उपासिका कांता मित्तल ने स्वाध्याय, ध्यान, जप आदि के द्वारा अभिनव सामायिक का प्रयोग सभी को करवाया।

तेयुप के मंत्री कुणाल मित्तल ने कहा कि जैन धर्म में समता की साधना को महत्त्व दिया है। समता की साधना का नाम ही सामायिक साधना है। वर्ष के प्रथम दिन समतारूपी साधना में रमण करते हुए हम अपने कर्मों की निर्जरा करें, इससे उचित

कोई कार्य हो नहीं सकता।

इस अवसर पर नरेश जैन, नारायण सिंह रोहिल्ला, विमल जैन, राजन जैन, राजेश जैन, प्रवीण जैन, संदीप जैन, मास्टर राजकिशन जैन, कुणाल मित्तल आदि उपस्थित थे।

### साउथ हावड़ा

अभातेयुप के निर्देशन में अभिनव सामायिक फेस्टिवल का आयोजन मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में कोलाघाट के संजीवनी हॉल में तेयुप कोलकाता हावड़ा, सबर्बन की शाखा परिषदों द्वारा संयुक्त रूप से किया गया।

मुनि जिनेश कुमार जी ने अभिनव सामायिक का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के संगान के साथ करवाया। तत्पश्चात मुनि परमानंद जी ने जप का प्रयोग करवाया। मुनि जिनेश कुमार जी द्वारा ध्यान का प्रयोग व बाल मुनि कुणाल जी द्वारा स्वाध्याय में चौबीस का संगान करवाया गया। मुनि जिनेश कुमार जी ने 9 सामायिक के महत्त्व को समझाया।

सामायिक फेस्टिवल में तेयुप साउथ हावड़ा से २५ युवक, ७ किशोरों सहित श्रावक समाज की अच्छी उपस्थिति रही। सामायिक में परिषद के विशेष आमंत्रित सदस्य मनीष कुमार बैद एवं दीपक नखत की उपस्थिति रही।

तेयुप साउथ हावड़ा के अध्यक्ष विरेंद्र बोहरा ने उपस्थित सभी का स्वागत किया एवं मुनिश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए सभी का आभार ज्ञापन किया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद जी द्वारा किया गया। कार्यक्रम के पर्यवेक्षक ज्ञानमल लोढ़ा ने कहा कि संयोजक अंकित चोरडिया एवं चंचल दुगड़ के अथक श्रम से कार्यक्रम सफल हुआ।

### गंगाशहर

अभातेयुप के तत्वावधान में तेयुप द्वारा अभिनव सामायिक फेस्टिवल का आयोजन शांति निकेतन सेवा केंद्र व्यवस्थापिका साध्वी कीर्तिलता जी के सान्निध्य में हुआ। इस कार्यक्रम के प्रभारी मांगीलाल बोथरा ने बताया कि ३५२ श्रावक-श्राविकाओं द्वारा सामायिक साधना का लाभ लिया गया।

तेयुप अध्यक्ष अरुण कुमार नाहटा ने बताया कि साध्वीश्री जी ने सरलता से अभिनव सामायिक को विस्तारपूर्वक समझाया। मंत्री भरत गोलछा ने बताया कि इस कार्यक्रम में गंगाशहर सभा, तेयुप, महिला मंडल, किशोर मंडल, कन्या मंडल एवं अन्य संस्थाओं के पदाधिकारियों एवं सदस्यों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम के अंत में देवेन्द्र डागा द्वारा आभार ज्ञापन किया गया।

### वडोदरा

अभातेयुप के तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम अभिनव सामायिक का आयोजन तेयुप द्वारा सभा भवन में किया गया।

मुनि डॉ० पुलकित जी के सान्निध्य में कार्यक्रम आयोजित हुआ। सभा अध्यक्ष, महिला मंडल अध्यक्षा, ज्ञानशाला, अणुव्रत समिति, टीपीएफ के पदाधिकारीगण सहित समाज के कुल 9४० लोगों ने सामायिक में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

अध्यक्ष पंकज बोलिया ने आभार ज्ञापित किया।

### विलेपार्ले

आगम मनीषी बहुश्रुत परिषद के संयोजक प्रो० महेंद्र कुमार जी स्वामी के सान्निध्य में नववर्ष के मंगलपाठ का आयोजन हुआ। जिसमें विलेपार्ले महिला मंडल व तेयुप ने अपनी उपस्थिति दी। अभिनव सामायिक कर सभी ने नववर्ष की शुरुआत की।

मुनि जम्बू कुमार जी ने सामायिक के मंत्रों द्वारा अनुष्ठान करवाया। मुनि सिद्ध कुमार जी ने त्रिपदी वंदना द्वारा सामायिक की शुरुआत एवं संपन्नता करवाई तथा परमेष्ठी वंदना का भी संगान किया। मंगलपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

कार्यक्रम में महिला मंडल एवं तेयुप से 9२५ से अधिक एवं पूरे समाज से सराहनीय उपस्थिति रही।

### हैदराबाद

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा अभिनव सामायिक फेस्टिवल 'उत्सव विश्व मैत्री' का आयोजन तेरापंथ भवन डी०वी० कॉलोनी, सिकंदराबाद में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ हुआ।

अध्यक्ष वीरेंद्र घोषल ने कार्यक्रम में पधारे हुए सभी महानुभावों का स्वागत किया। तेरापंथी सभा, सिकंदराबाद के मंत्री सुशील संचेती, तेममं अध्यक्षा अनिता गिडिया, टीपीएफ मंत्री अणुव्रत सुराणा ने कार्यक्रम के लिए शुभकामनाएँ प्रेषित की।

औरंगाबाद से पधारी विज्ञ उपाधिधारक एवं तत्त्वज्ञानी चेष्टा सुराणा ने सभी को अभिनव सामायिक के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि सामायिक में त्रिपदी वंदना, ध्यान, स्वाध्याय, जाप आदि करते हुए पूर्ण श्रद्धा के साथ शुद्ध सामायिक करनी चाहिए।

तेयुप के पूर्व अध्यक्ष लक्ष्मीपत बैद, नवीन सुराणा व राहुल श्यामसुखा, तेयुप अध्यक्ष वीरेंद्र घोषल, अभातेयुप सदस्य विशाल आंचलिया, टीपीएफ राष्ट्रीय टीम

के नवीन सुराणा, दीपक संचेती, ऋषभ दुगड़, मोहित बेद, तेयुप के मंत्री नीरज सुराणा, सहमंत्री नवीन लुनिया सहित अनेक सदस्यगण उपस्थित थे।

नववर्ष के प्रथम कार्यक्रम अभियान सामायिक फेस्टिवल के संयोजक रवि प्रकाश कोटेवा ने परिश्रम कर कार्यक्रम को सफल बनाया। कार्यक्रम का संचालन निखिल कोटेवा ने किया। मंत्री नीरज सुराणा ने पधारे हुए सभी का आभार व्यक्त किया।

### औरंगाबाद

साध्वी मधुस्मिता जी के सान्निध्य में नववर्ष के उपलक्ष्य में अभातेयुप के तत्वावधान में तेयुप द्वारा अभिनव सामायिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

साध्वी सहजयशा जी ने त्रिपदी वंदना पाठ करवाया। साध्वी मधुस्मिता जी ने जप का प्रयोग करवाया। साध्वी मल्लिप्रभा जी ने लोगस्स का पाठ करवाया। ध्यान का प्रयोग साध्वी भावयशा जी ने करवाया।

स्वाध्याय के क्रम में चौबीसी का पाठ सभी साध्वीश्री जी ने सामूहिक रूप में करवाया। त्रिगुप्ति साधना का प्रयोग साध्वी सहजयशा जी ने करवाया। अंत में सामूहिक रूप से परमेष्ठी वंदना का पाठ किया गया।

इस अवसर पर तेयुप के अध्यक्ष विवेक बागरेचा व मंत्री अंकुर लुणिया ने सभी का स्वागत एवं आभार व्यक्त किया।

### मुंबई

शासनश्री साध्वी चंदनबाला जी एवं साध्वी राकेश कुमारी जी के सान्निध्य में ठाणे तेरापंथ भवन में अभिनव सामायिक का आयोजन हुआ।

साध्वी चंदनबाला जी ने कहा कि बीती ताहि बिसार दे, परंतु अच्छी बातें और अच्छी यादें संजोकर रखें। गलतियों को सुधारकर अच्छी आदतों को स्वीकार करें। साध्वी राकेश कुमारी जी ने कहा कि नए साल में नई उमंग नए उत्साह के साथ नई ऊँचाइयों को प्राप्त करने का प्रयास करें। ४० मिनट तक साध्वीवृंद द्वारा मंगलमय मंत्रों का उच्चारण किया गया। स्वागत सभा अध्यक्ष रमेश सोनी ने किया। सिटी महिला मंडल अध्यक्षा अनीता धारीवाल, तेयुप अध्यक्ष अविनाश गोगड़ और सरला भूतोडिया ने विचार रखे। आभार सभा के संगठन मंत्री कमलेश दुगड़ ने किया।

◆ बाह्य आँखों का महत्त्व है तो भीतरी आँख और भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण है। साधक को उस आँख के द्वारा स्वयं को देखने का अभ्यास करना चाहिए।



# सहिष्णुता, सेवा और सहयोग की भावना बने वर्धमान : आचार्यश्री महाश्रमण



**बालोतरा, 99 जनवरी, 2023**

वर्धमान महोत्सव एवं बालोतरा प्रवास का अंतिम दिन। विकास पुरुष, तेरापंथ के महानायक आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि वर्धमानता अनेक संदर्भों में हो सकती है। संख्या, उम्र, गुणात्मकता व शरीर-बल आदि की वर्धमानता, वर्धमानता का नकारात्मक पक्ष है—दुर्गुणों की वर्धमानता न हो जाए।

धर्म और पुण्य दो तत्त्व हैं। आम आदमी इन दोनों को एक ही श्रेणी में मान लेता है। पर सूक्ष्मता में तात्त्विक वर्णन के अनुसार धर्म और पुण्य अलग-अलग होते हैं। धर्म जीव है, पुण्य अजीव है। धर्म अमूर्त है, पुण्य मूर्त है। पुण्य तो बंधने वाले कर्म हैं। उदय में भी आते हैं। धर्म की वर्धमानता तो वांछनीय है, पर पुण्य की

वर्धमानता बहुत विरक्त-भाव की दृष्टि से देखें तो वांछनीय नहीं है। साधु-साध्वी को तो पुण्य वर्धमान की आकांक्षा नहीं करनी चाहिए।

तीर्थकरों के आठ प्रतिहार्य होते हैं। वो धर्म नहीं है, पुण्य है। तीर्थकर की साधना धर्म है। अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन आदि चार प्रथम गुण धर्म से जुड़े हैं, ये निश्चय हैं। हम वांछा निर्जरा की करें। साधु के दो संवर सम्यक्त्व और व्रत तो होते ही हैं। अप्रमाद संवर की वर्धमानता हो जाए। प्रमाद दो प्रकार का होता है—प्रमाद आश्रव अनुत्साह रूप है, दूसरा है, अशुभ प्रवृत्ति रूप प्रमाद। साधु के सावध योग प्रमाद का त्याग है, प्रमाद आश्रव के नहीं।

आगमों के मनन या ध्यान की गहराई में चले जाएँ तो ऐसी स्थिति में

अप्रमाद संवर आ सकता है। अशुभ योग की विरक्तता में पुष्टि आए। छठा गुणस्थान एकम का चांद है तो सातवाँ गुणस्थान पूनम का चाँद—धीरे-धीरे आगे बढ़ें।

वर्धमानता हमारी सातवें गुणस्थान की हो, वो बड़ी चीज है। माता मरुदेवा की तरह सामान्य अवस्था में बैठा आदमी सातवें गुणस्थान या आगे भी बढ़ सकता है। अशुभ योग प्रमाद संवर से दोष लग सकता है। अकषाय संवर तो वर्तमान में नहीं आ सकता पर अकषाय के भाव हमारे में पुष्ट हो जाएँ। कषाय के भाव प्रतनू हों।

हम सम्यक् दिशा में आगे बढ़ें। शक्ति में वर्धमानता एवं सहिष्णुता भी रहे। क्षमा का भी भाव रहे। परावर्लंबिता से जितना बच सकें, बचने का प्रयास करें। आपस में सामंजस्य भी रहे। हम साताकारी बने रहें। परस्पर का व्यवहार अच्छा रहे। चित्त समाधि रखें और देने की भावना रखें। सहयोग की भावना रहे। आध्यात्मिक सहयोग देना भी एक सेवा है।

व्याख्यान-उपदेश देना भी सेवा है। मुनि दिनेश कुमार जी भी कितनी सेवा करते हैं, संयोजन भी करते हैं। कई संत आगे-आगे चलते हैं। सतियाँ भी समय पर सारे काम समुच्चय की गोचरी व अन्य कार्य करते हैं। खुद की अनुकूलता को गौण करते हैं। अनेक सेवा के उपक्रम हैं। बड़ों की सेवा के लिए तत्पर रहते हैं। न्यारा वाले अपने ढंग से करते हैं। गुरुकुल वाले

भी अलग-अलग ड्यूटी में लगे रहते हैं। कितना महान कार्य करते हैं। हर कार्य में निष्ठा-जागरूकता रहती है, वो विशेष है।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी एवं साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी का भी बहुत सहयोग रहता है। जिंदगी में जो सेवा का मौका मिलता है, वो अपनी पूँजी होती है। विहार का रास्ता तय करना भी विशेष सेवा का काम है। ख्यात लिखना, नवदीक्षितों को तैयार करना भी बड़ी सेवा है। सेवा से निर्जरा का कार्य होता है। शारीरिक सेवा के साथ बौद्धिक सेवा भी करते हैं। बौद्धिक सेवा करना भी महत्त्वपूर्ण है। लीडर बनना बड़ी बात होती है। लीडिंग व मैनेजमेंट पॉवर भी अच्छा रहे। क्षयोपशम सबमें समान नहीं होता है।

संयोजन करते-करते विकास हो जाता है, साथ में विनय भाव रहते हैं। आगम कार्य में भी दिमाग चाहिए। जिसे हर कोई नहीं कर सकता है केवल प्रज्ञावान ही कर सकता है। आध्यात्मिक पर्यवेक्षण का भी कार्य करते हैं। परस्पर एक-दूसरे का सहयोग करने से संगठन का काम चलता है, वहाँ अनेक प्रकार के व्यक्तित्व चाहिए। सबका अपना कर्तव्य है। सेवा भावना से कार्य करने से आनंद की अनुभूति होती है। जहाँ जो उचित हो सेवा देते रहें। वर्धमानता में हमारा बढ़ना होता रहे। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने बहुत समय अध्यापन, आगम, प्रेक्षाध्यान में व

समाधान देने में लगाया है। उनसे भी हम प्रेरणा लें।

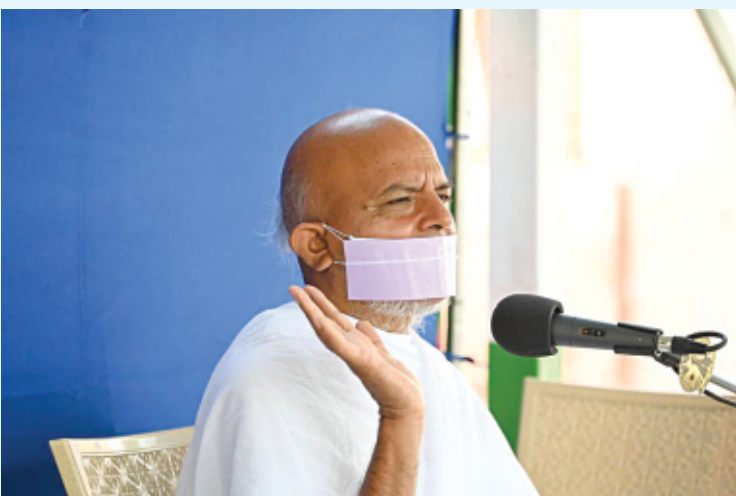
चारित्र्यात्माएँ बड़ी अध्यात्म रत्न की माला हैं। श्रावक-श्राविकाएँ छोटी रत्नों की मालाएँ हैं। बड़ी माला का महत्त्व ज्यादा है। अनेक रूपों में सेवा के कार्य हैं, हम सेवा में लगे रहें। लोच करना भी सेवा है। सौहार्द भाव से काम करना सेवा ही है। हम सेवा के क्षेत्र में वर्धमानता रहे।

बालोतरा अच्छा क्षेत्र है। तपस्या भी अच्छी हो रही है। लोगों में अनेक समाजों में आपसी सौहार्द है। आज ये वर्धमान महोत्सव संपन्न होने को है। सबमें आध्यात्मिक चित्त समाधि रहे, अच्छे कार्य करते रहें।

मुनि पुनीत कुमार जी ने अपनी जन्मभूमि की ओर से पूज्यप्रवर का स्वागत किया। पूज्यप्रवर के स्वागत में मुमुक्षुवृंद ने गीत की प्रस्तुति दी। ज्ञानशाला ज्ञानार्थियों ने महाश्रमण अष्टकम्, कव्वाली व बारहव्रतों पर प्रस्तुति दी। मुमुक्षु साधना बांठया, सैफाली चोपड़ा, ज्ञानशाला मुख्य प्रशिक्षिका उर्मिला, तेयुप, महिला मंडल व कन्या मंडल समूह गीत की प्रस्तुति दी। कन्या मंडल संयोजिका साक्षी, महिला मंडल समूह गीत का संगान किया। राजेश खीमेसरा, शैली गोगड़, सिद्धार्थ ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

## जहाँ सच्चाई है वहीं प्रभु का वास है : आचार्यश्री महाश्रमण



**रिखोली, 93 जनवरी, 2023**

तीर्थकर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमण जी पचपदरा से लगभग 98 किलोमीटर का विहार कर रिखोली पधारे।

अमृत देशना प्रदान करते हुए युगपुरुष ने फरमाया कि पाँच प्रकार के पाप होते हैं। हिंसा, झूठ, चोरी, मैथुन और परिग्रह। अठारह पाप भी बताए गए हैं। पापों का

परित्याग करना साधु के लिए तो आवश्यक है ही, गृहस्थ भी इनसे जितना बच सके, प्रयास करना चाहिए।

हिंसा एक ऐसा तत्त्व है, जिससे दुःख पैदा होता है। दुःख से छुटकारा पाना है, तो हिंसा के भावों को छोड़ना आवश्यक है और अहिंसा के पथ पर चलना अपेक्षित होता है। अहिंसा शांति का मार्ग है। हिंसा के तीन प्रकार बताए गए हैं—आरंभजा, प्रतिरक्षात्मक और संकल्पजा हिंसा। आरंभजा हिंसा तो गृहस्थ के लिए आवश्यक है। प्रतिरक्षात्मक हिंसा भी आवश्यक हो सकती है। अपने अस्तित्व की, राष्ट्र की रक्षा करना इसका लक्ष्य हो सकता है।

संकल्पजा हिंसा त्याज्य है। अहिंसा कमजोरी पर आधारित नहीं होनी चाहिए। शौर्य-वीर्य से संयुक्त अहिंसा हो। अहिंसा परम धर्म है। हिंसा, झूठ-कपट पाप माना गया है। जहाँ सच्चाई है, वहाँ प्रभु का वास है। किसी का अहित हो जाए वैसा झूठ गृहस्थ को नहीं बोलना चाहिए। चोरी भी पाप है। सबके साथ मैत्री का भाव एवं ईमानदारी रखें। यह एक प्रसंग के माध्यम से समझाया कि झूठ-चोरी से बचने का प्रयास हो।

आज इस गाँव और विद्यालय में आए हैं। यहाँ भी सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति के अच्छे संस्कार बने रहें। पूज्यप्रवर ने विद्यार्थियों व ग्रामवासियों को

तीनों संकल्प समझाकर स्वीकार करवाए।

पूज्यप्रवर के स्वागत में स्थानीय सरपंच भंवरूखा ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। व्यवस्था समिति की ओर से विद्यालय परिवार का सम्मान किया गया।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि गुस्सा न करने वाला अपने चेहरे और वाणी को अच्छा रखता है।

रिखोली से सांध्यकालीन विहार कर आचार्यप्रवर पाटोदी गाँव के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय पधारे जहाँ स्थानीय लोगों ने पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया।





# जीवन के कल्याण के लिए करें साधु की उपासना : आचार्यश्री महाश्रमण

परेऊ, 9५ जनवरी, २०२३

तीर्थंकर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमण जी प्रातः लगभग 9२ किलोमीटर का विहार कर परैव पधारे। उपस्थित जनमेदिनी को मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए परम पावन ने फरमाया कि आदमी के जीवन में निमित्त और उपादान का प्रभाव होता है, हो सकता है। उपादान मूल और निमित्त सहायक कारण है।

कारण से कार्य होता है और तपस्या से निर्जरा होती है। कर्म निर्जरा में तपस्या कारण है और भी कारण हो सकते हैं। कार्य होने में सहायक कारण है। हम हमारे जीवन में अनेक संदर्भों में उपादान और निमित्त खोज सकते हैं। गुस्से का मूल उपादान कारण मोहनीय कर्म है।

आदमी के जीवन में परिष्कार आता है। साधु श्रमण महान की उपासना करो। आपको सुनने का लाभ मिल सकेगा। अच्छी आर्ष वाणी सुनने से कान पवित्र हो जाते हैं। सुनने से हमें ज्ञान मिलता है।



ज्ञान से विशेष ज्ञान होगा कि क्या हेय है, क्या उपादेय है। विशेष ज्ञान से प्रत्याख्यान होगा। प्रत्याख्यान से संयम और संयम से आश्रव रुक सकता है। संवर से तपस्या

होगी एवं तपस्या से निर्जरा होगी। आगे करते-करते अक्रिया-अयोग अवस्था होगी और मोक्ष मिल जाएगा। साधुओं का निमित्त और खुद का

क्षयोपशम का निमित्त मिलने से आदमी कहीं से कहीं पहुँच सकता है। गुरु से आगे चेला निकल सकता है। गुरु गुड़ रहा, चेला शक्कर हो गया। बाप से आगे बेटा निकल

सकता है। अच्छा शिष्य मिलना गुरु का भाग्य है। अच्छे बेटे का मिलना बाप का भाग्य है।

घड़े में तो पानी समाता है, पर घड़े में पैदा हुए अगस्त्य ऋषि समुंद्र को पी गए। योग-भाग्य की करामात हो सकती है। हम श्रमशील बनें, सुविधावादी न बनें। संतों की संगति जितनी मिले करने का प्रयास करें।

पूज्यप्रवर ने परेऊवासियों को सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति के संकल्पों को समझाकर संकल्प स्वीकार करवाए।

पूज्यप्रवर के स्वागत में स्थानीय सरपंच बांकाराम चौधरी परेऊ मठाधीश औंकार भारती महाराज ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

आशादेवी गोलछा ने ४9 व टीना श्रीश्रीमाल देवी ने ३० की तपस्या के प्रत्याख्यान पूज्यप्रवर से ग्रहण किए।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

## संयम की साधना से सर्वकालिक दुःख मुक्ति हो सकती है : आचार्यश्री महाश्रमण



रावड़ी ढाणी, 9४ जनवरी, २०२३

परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी प्रातः लगभग 9३ किलोमीटर का विहार कर रावड़ी ढाणी के विद्यालय में पधारे। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में पूज्यप्रवर ने मंगल पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारी दुनिया में दुःख भी और सुख भी मिलता है। दुःख और सुख अनेक प्रकार के हैं।

जन्म, जरा, व्याधि और मृत्यु दुःख है। एक तात्कालिक दुःख-मुक्ति और एक सार्वकालिक दुःख-मुक्ति होती है। अनेक रूप में तात्कालिक दुःख मुक्ति हो सकती है, पर वो बड़ी बात नहीं है। बड़ी बात है—सार्वकालिक दुःख-मुक्ति। फिर दुःख होगा ही नहीं। दुःख का उन्मूलन हो जाए।

शास्त्र में कहा गया है कि अपने आपका अभिनिग्रह करो। इस प्रकार दुःख-मुक्ति हो जाएगी। संयम की साधना से सार्वकालिक दुःख मुक्ति प्राप्त हो सकती है। संयम की चेतना का विकास हो। शरीर, वाणी, मन और इंद्रियों का संयम रखें। गुणों के पहाड़ पर आरोहण करें, अहंकार के पहाड़ पर नहीं। चतुर्विध संयम हो जाए। गृहस्थों में भी संयम हो।

नशा आदि व्यसनो से मुक्त रहें यह एक प्रसंग से समझाया कि व्यसन से बहुत नुकसान होता है। संयम से आदमी सुखी बन सकता है। मन पर संयम हो। यह भी एक प्रसंग से समझाया कि हम संयम करें, यह दुःख-मुक्ति का मार्ग है।

पूज्यप्रवर ने सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति के संकल्पों को समझाकर स्थानीय लोगों को अवगत किया।

पूज्यप्रवर के स्वागत में नखत सिंह, ब्लॉक शिक्षाधिकारी लच्छाराम सियाल ने पूज्यप्रवर का अपने गाँव पधारने पर भावों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

## चित्रमय झलकियाँ : आचार्यश्री महाश्रमण

